द्वीप लहरी

अप्रैल - जून 1992



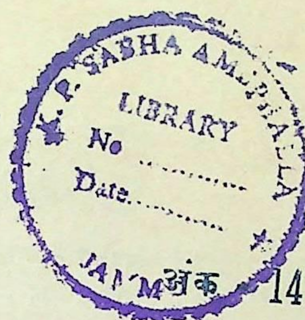
हिन्दी साहित्य कला परिषद्
अण्डमान तथा निकोबार द्वीप समूह
पोर्ट ब्लेयर

रचनाकारों मे निवेदन

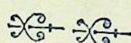


प्रकाशन
हेतु रचनाएं भेजते
हुए ध्यान रखिए कि
रचनाएं 1000 से अधिक
शब्दों की नहीं हों पांडुलिपि
कागज के एक ही ओर लिखी हों,
लिखावट स्पष्ट हो, विषय समसामयिक हो,
साहित्य की सभी विधाओं की रचनाओं का स्वागत
है स्वीकृत रचनाएँ पत्रिका के आगामी अंको में प्रकाशित
की जाएँगी सम्पादक का निर्णय अन्तिम माना जाएगा।
रचनाएँ लौटाई नहीं जाएगी और उस संबंध में किसी
भी प्रकार का पत्र व्यवहार नहीं किया जाएगा।
प्रकाशित रचनाओं पर पारिश्रमिक देने की
व्यवस्था फिलहाल नहीं है। प्रकाशित
रचनाओं की प्रतियाँ रचनाकारों
के पास अवश्य ही भेजने
की व्यवस्था की
जाएगी

द्वीप लहरी



वर्ष - 4



अंक 14

अप्रैल - जून - 1992

संरक्षक

मोहम्मद ज़की सिद्दीकी

नवीन चन्द्रा 'नवीन'



प्रधान संपादक

ईश्वरी प्रसाद गौड़

सम्पादक

आनन्द वल्लभ शर्मा 'सरोज'



सहसम्पादक

डॉ० गोविन्द सिंह पवार

श्रीमती डी० एम० सावित्री

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी हैं।

❀ प्रकाशक :

हिन्दी साहित्य कला परिषद्

अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह
पोर्ट ब्लेयर

❀ मूल्य :

एक प्रति — रु० 5/-
वार्षिक — रु० 20/-
आजीवन — रु० 500/-

❀ मुद्रक :

ज्योति प्रिन्टर्स
मिडिल पाइंट, पोर्ट ब्लेयर
दूरभाष : 20974

सम्पादकीय-

बन्धुवर !

समर्पित है भारतीय मनीषा को इस वर्ष का 'द्वीप लहरी' का यह दूसरा अंक। अनेक बाधाओं के रहते भी द्वीप-लहरी' निरन्तर अपने यात्रा-पथ पर अग्रसर है इस सबका श्रेय है उन सहृदय साहित्य सेवियों को, जिन्होंने हमारा अनुरोध स्वीकार कर हमें अपने निरन्तर सहयोग का आश्वासन देते हुए 'द्वीप लहरी' के स्वरूप को सजाने-सँवारने में हमारी सहायता की है। 'लघुकथा' लेखन के क्षेत्र में आज के बहुचर्चित हस्ताक्षर, दिल्ली के श्री 'अशोक लव' ने जहाँ देश के सुप्रसिद्ध साहित्य-कारों से किए गए— 'साक्षात्कार' 'द्वीप लहरी' में धारावाहिक रूप में प्रकाशित कराने का दायित्व स्वयं सँभालकर, हम पर अहैतुकी अनुकम्पा की है, वहीं प्रतिष्ठित रचनाकार और काव्य-कला-मर्मज्ञ, आगरा के डॉ० प्रसाद निष्काम ने, हमारी पत्रिका के लिए 'छन्द-शास्त्र' विषयक लेख-माला निरन्तर भेजते रहने का हमारा आग्रह कृपापूर्वक स्वीकार कर लिया है। आगामी अंक से यह उपयोगी लेख माला 'द्वीप लहरी' में धारावाहिक रूप में प्रकाशित होती रहेगी। साक्षात्कारों के प्रकाशन का सिलसिला तो गत अंक से शुरू किया ही जा चुका है। हम इन दोनों विद्वानों के प्रति अपना आभार प्रकट करते हुए अन्याय प्रतिष्ठित रचना-धर्मियों से भी पुनः निवेदन करते हैं कि वे भी इसी प्रकार 'द्वीप लहरी' से जुड़कर हमारा पथ प्रशस्त करने की कृपा करें।

हिन्दी भाषा और हिन्दी साहित्य की वृद्धि करना प्रत्येक भारतीय का राष्ट्रीय-दायित्व और प्रत्येक हिन्दी प्रेमी का परम कर्त्तव्य है। अतः किसी प्रकार के आपसी मत-भेद तथा अपने अहं और स्वार्थ का सर्वथा परित्याग करके हम सभी साहित्य सेवी भारत माता के मन्दिर में हिन्दी

की प्राण-प्रतिष्ठा करने को एक जुट हो जाएँ, यही हमारा ध्येय और यही हमारा संकल्प होना चाहिए। इस दृष्टि से इन द्वीपों में स्थित सभी रचनाकारों और बुद्धिजीवियों को तो सतत जागरूक रहने की और भी आवश्यकता है, विशेषकर उस युवा पीढ़ी को जिसके कन्धों पर द्वीपों के साहित्यिक और सांस्कृतिक भविष्य को उत्तरोत्तर समुन्नत करते रहने का गुरुतर दायित्व है। 'द्वीप लहरी' से जुड़कर यहाँ का साहित्य सेवी युवा अपनी ही भाषा में अपने रचनात्मक लेखन से यहाँ के तेजोमय तारुण्य को चतुर्दिक विकीर्ण करने में सहज समर्थ हो सकता है। तो आइए। क्यों न आप, और हम सब मिलकर इस मंगलमय अनुष्ठान को साकार करते हुए 'द्वीप लहरी' के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना को नित्य निरन्तर अधिकाधिक विकसित तथा पल्लवित और पुष्पित करें।

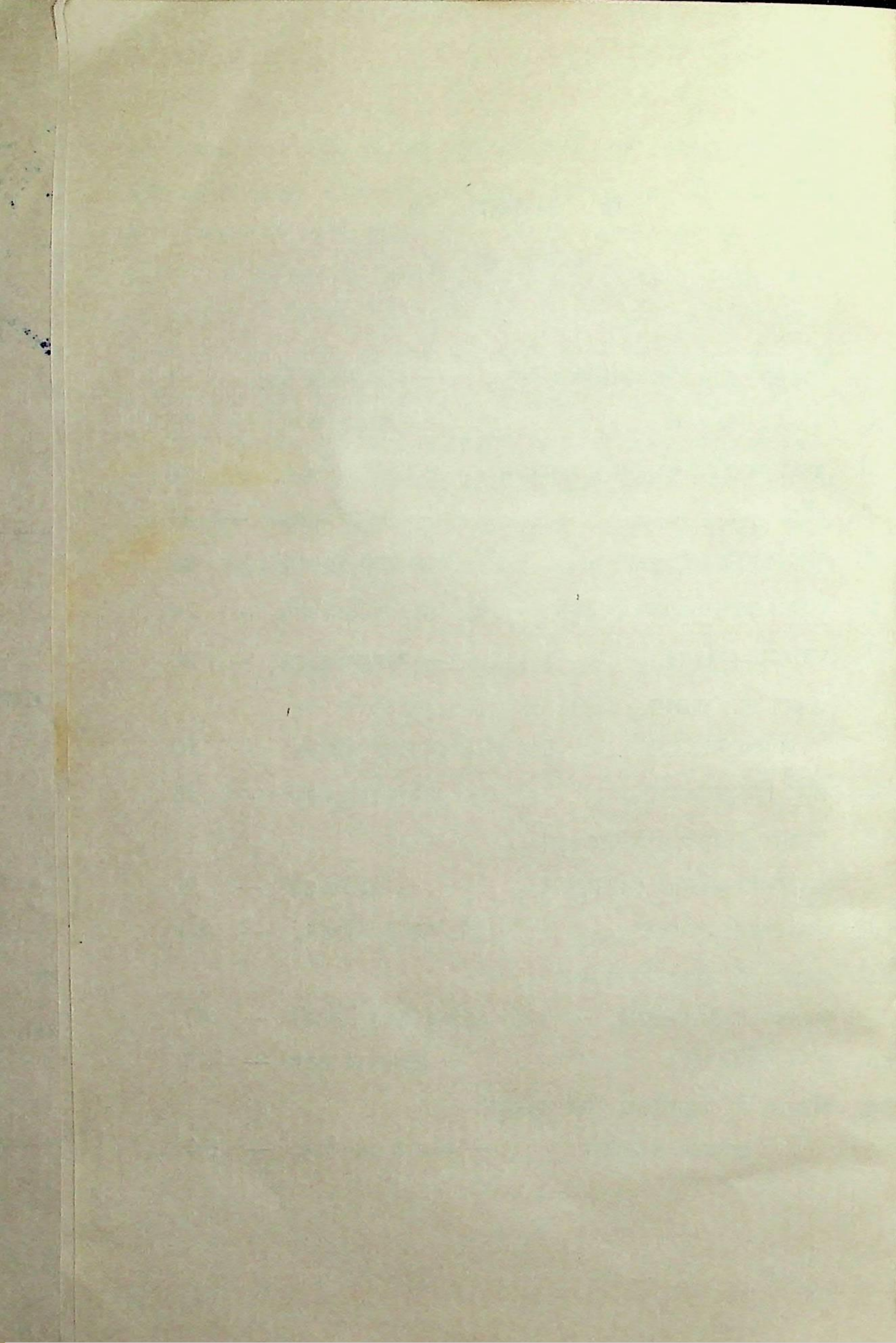
उत्फुल्ल हो नित आर्यजन जिसकी उतारें आरती
भगवान भारतवर्ष में गूँजे हमारी भारती।

— सम्पादक

❁ अनुक्रम ❁







द्वीप दर्शन –

बाराटांग द्वीप - ऐतिहासिक दृष्टि

— डॉ० जयदेव सिंह

भारत की मुख्य भूमि से दूर बंगाल की खाड़ी में हंसों की भाँति तैरते द्वीप अपनी हरितिमा और प्राकृतिक सुषमा के लिये जहाँ विख्यात है, वहीं पर ये "कालापानी", "शहीद एवं स्वराज्य द्वीपसमूह", "स्वर्ण द्वीप" आदि नामों से इतिहास के पृष्ठों पर उतरते रहे हैं। भारत के प्रमुख बन्दरगाह-कलकत्ता मद्रास एवं विशाखापटनम से अण्डमान-निकोबार समुद्री मार्ग से तो जुड़ा ही है, साथ ही कलकत्ता एवं मद्रास से हवाई मार्ग द्वारा द्वीपों की राजधानी पोर्ट ब्लेयर नगरी जुड़ी हुई है। अण्डमान निकोबार का भूगोल तो प्राचीन है ही किन्तु इतिहास भी कोई कम पुराना नहीं है। आज भारत का शायद ही कोई दूसरा भाग हो जहाँ पर पाषाणकालीन संस्कृति सुरक्षित हो। पाषाणकालीन संस्कृति की प्रतीक यहाँ की आदिम जनजातियों के विषय में स्पष्ट जानकारी देने में इतिहास भी असमर्थ हो रहा है। मानव-विज्ञान ने इस विषय में जो जानकारी प्राप्त की है उसमें कल्पना का पुट ही अधिक है।

समय का चक्र चलता रहता है और अतीत के धरातल पर ऐसी छाप छोड़ जाता है जो भावी पीढ़ी के लिए इतिहास बन जाती है। अनुसंधित्सु इसी इतिहास में से कुछ न कुछ नया खोज निकालता है। प्रस्तुत अध्ययन इसी प्रकार का एक प्रयास-मात्र है जिसमें अण्डमान द्वीप समूह के एक द्वीप (बाराटांग द्वीप)* का भौगोलिक सांस्कृतिक एवं शैक्षिक पृष्ठभूमि में अध्ययन किया गया है।

---

* डा० एल० पी० माथुर ने अपनी पुस्तक "हिस्ट्री आफ अण्डमान एण्ड निकोबार आईलैंड्स" (पृष्ठ 1) में यह बताया है कि अण्डमान द्वीप पाँच द्वीपों - उत्तरी अण्डमान, मध्य अण्डमान, बाराटांग, दक्षिणी अण्डमान एवं रटलैंड द्वीप आदि का एक समूह हैं।

बाराटांग द्वीप पोर्ट ब्लेयर नगर से लगभग 40 किलोमीटर दूर उत्तर-पूर्व दिशा में स्थित है। दक्षिण अण्डमान की "मिडिल स्ट्रेट" खाड़ी तथा मध्य अण्डमान की "हम्फ्री स्ट्रेट" खाड़ी द्वारा द्वीपसमूह की लम्बी श्रृंखला से यह द्वीप अलग होता है।

इस द्वीप के भूगोल को संक्षेप में निम्न तथ्यों से जाना जा सकता है—

द्वीप की स्थिति	92° 45 से 92° 55 पूर्वी देशान्तर तथा 12° 3 से 12° 19 उत्तरी अक्षांश के मध्य
क्षेत्रफल	297 8 वर्ग किलोमीटर
मिट्टी	पथरीली लाल * ("लालटीकरी" * वाले क्षेत्र में), जलोढ़*, मटियार एवं दोमट मिट्टी

---

* मिडिल स्ट्रेट खाड़ी की दिशा में एक काफी ऊँची पहाड़ी है, जिसकी मिट्टी पूर्णतः लाल है। इसीलिए यह "लाल टीकरी" के नाम से जानी जाती है। आदिम जनजाति "जारवा" के आक्रमण के भय से इस स्थान पर एक "बुश पुलिस" चौकी बनाई गई थी, जिसे अब हटा दिया गया है।

* ग्रेट अण्डमानी नामक आदिवासी जनजाति का नेता "लोका" इसी लाल टीकरी पर निवास करता था, 1961 की जनगणना के समय अण्डमानी आदिवासी, जिनकी संख्या 19 थीं, पोर्ट ब्लेयर, तिरूर, लाँग आईलैंड तथा लाल टीकरी (बाराटांग) आदि अलग-अलग स्थानों पर बसे हुए थे।

* मुख्यतः हाम्फ्री स्ट्रेट की खाड़ी वाले किनारों पर यह मिट्टी पायी जाती है। इसके अतिरिक्त उन गहरे क्षेत्रों में भी यह मिट्टी पायी जाती है जहाँ उच्च ज्वार के समय समुद्र का पानी आकर भर जाता है।

औसत तापमान	31 सेन्टीग्रेट अधिकतम
औसत वार्षिक वर्षा	2975.0 मिलीमीटर
औसत वायु-गति	10.7 कि० मी० प्रति घंटा
प्राकृतिक वनस्पति	विषुवत रेखीय अर्ध सदाबहार वन सम्पूर्ण द्वीप में पाए जाते हैं। इन वनों के प्रमुख

वृक्ष हैं— पडॉक, गर्जन, चुगलम, चुई, बेंत एवं बाँस आदि। जायफल की तीन दुर्लभ जातियाँ भी यहाँ के जंगलों में पाई जाती हैं। वृक्षा-रोपण के अन्तर्गत सागौन के वृक्षों को उगाया जाता है। समुद्र के तटवर्ती उथले क्षेत्रों में "मैनग्रोव" वृक्षों की कई जातियाँ पायी जाती हैं। प्राकृतिक वनों का निवासियों द्वारा तीव्रगति से दोहन किया जा रहा है। इसके विपरीत वृक्षारोपण की गति अपेक्षाकृत धीमी है। जिसमें पारिस्थितिक-सन्तुलन (इकोलोजिकल बैलन्स) को खतरा उत्पन्न होता जा रहा है।

यहाँ की पथरीली मिट्टी में "ह्यूमस" की मात्रा कम होने के कारण जलग्रहण की क्षमता अपेक्षाकृत कम हैं। खाड़ी की जलोढ़ मिट्टी वाले क्षेत्रों में निवास करने वाले खतरनाक मगरमच्छों के लिए बाराटांग की दोनों खाड़ियाँ विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं। "वालू डेरा" नामक गाँव की सीमा को छूता हुआ खुला समुद्र एक ऐसा "सी बीच" है जिसे पर्यटन एवं मनोरंजन के लिए विकसित किया जा सकता है। इसी " सी-बीच " वाले क्षेत्र में "लैगून" भी पाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त विशेष बात यह है कि संकरी खाड़ियों से सटे बाराटांग के किनारे वाले क्षेत्र कीचड़-युक्त पानी से घिरे रहते हैं। जबकि खाड़ी के दूसरी ओर स्थित द्वीपों के किनारे पथरीली चट्टानों के हैं। सम्पूर्ण द्वीप का धरातल अभी अपरि-पक्व अवस्था में हैं जिसमें भूमिकटाव और चट्टानें खिसकने की सम्भावनाएँ अपेक्षाकृत अधिक रहती है। यही कारण है कि इस द्वीप

में बनी सड़कें और कच्चे मार्ग आदि बरसात के मौसम में "भूमिकटाव" और "खिसकन" की चपेट में आ जाते हैं। यहाँ पर बहने वाले अधिकांश नाले बरसाती ही हैं। किन्तु "अडाज्जिक" के पास बहने वाला "शंकर-नाला" बारहमासी है। सार्वजनिक निर्माण विभाग ने इसी नाले के जल को शंकरनाला, विष्णुनाला, साउथ क्रीक तथा ओरलकच्चा आदि में सप्लाई किया है।

यहाँ के जंगलों में पाये जाने वाले जंगली जानवरों में हरिण एवं जंगली सूअर मुख्य हैं। हवावील, अण्डमानी कबूतर, तोता और हरियल आदि इस द्वीप के प्रमुख पक्षी हैं। बाराटांग द्वीप तीन और संकरी खाड़ियों तथा एक ओर से खुले समुद्र से घिरा है। द्वीप की ढाल पश्चिम से पूर्व की ओर हैं।

पिछले कुछ वर्षों से यहाँ की भूमि के आंतरिक पृष्ठ पर एक तीव्र हलचल होने के संकेत प्राप्त हुए है। इस हलचल के प्रमाण है- कई स्थानों पर प्रकट होने वाले धरातलीय परिवर्तन। ये परिवर्तन * ऐसे हैं

---

* बाराटांग द्वीप में धरातलीय विस्फोट की घटना 29 अक्टूबर, सन् 1984 ई० को दोपहर के समय ओरलकच्चा नयागढ़-रजतगढ़ मार्ग पर सागौन प्लांटेशन के पास वाले नाले पर हुई। ऐसे ही धरातलीय विस्फोट किसी भी समय खट्टाखाड़ी और बालूडेरा के पास हो सकते हैं क्योंकि यहाँ पर कुछ-कुछ ज्वालामुखीय लक्षण पाये जाते हैं। निस्संदेह बाराटांग द्वीप भूगर्भ शास्त्रियों के लिये अध्ययन का विषय है।

जिनके अन्दर से गैस युक्त (मिथेन गैसयुक्त कीचड़ निकल रही है। यह धरातलीय हलचल कब अपना वास्तविक रूप दिखाएगी, कहा नहीं जा सकता। इस परिवर्तन के उदाहरण के रूप में नीलाम्बुर बस्ती में स्थित "पशु चिकित्सालय चौकी" के सामने वाली पहाड़ी पर भी पुराने समय में प्रकट हुए ज्वालामुखी के संकेत देखे जा सकते हैं। लावा ठण्डा होने के फलस्वरूप उत्पन्न चमकीले एवं छोटे-छोटे पत्थर इसी पहाड़ी पर आज भी देखे जा सकते हैं।

खट्टाखाड़ी की ओर खुले समुद्र के किनारे वाले क्षेत्र में परतदार चट्टानों की एक श्रृंखला-सी पाई जाती है। द्वीप के अन्य क्षेत्रों में, जहाँ कहीं भी चट्टाने पाई जाती हैं, वे सब परतदार ही हैं।

ऐतिहासिक दृष्टि से यह द्वीप भी उतना ही महत्वपूर्ण है, जितना कि सम्पूर्ण अण्डमान एवं निकोबार द्वीपसमूह। आदिम जनजाति "जारवा"* "आकावी-डा"* आदि का निवास स्थल भी बाराटांग रहा है। कालांतर में जब ब्रिटिश सरकार ने "अण्डमानी" जनजाति से मैत्री पूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने की दिशा में पोर्ट मोट, हैडो और रास द्वीप में "अण्डमान

---

* "जारवा" नामक जनजाति अण्डमान द्वीपसमूह के घने जंगलों में निवास करने वाली आदिम जनजातियों में से एक है। अपने भयावह एवं खूँखार व्यवहार के लिए यह जनजाति प्रसिद्ध है। द्वीपों के प्रशासन की ओर से इनके साथ मैत्री-पूर्ण सम्बन्ध बनाने की दिशा में प्रयास किये जा रहे हैं। आजकल "जारवा" जनजाति के लोग बाराटांग में नहीं अपितु दक्षिणी एवं मध्य अण्डमान के पश्चिमी किनारे वाले क्षेत्रों में निवास करते हैं।

* यह जनजाति अब पूर्णतः समाप्त हो गयी है। पहले यह जनजाति भी बाराटांग के उस क्षेत्र में निवास करती थी, जहाँ आजकल "अडाजिक" नामक बस्ती है।

होम" एक स्थापित किये तो "अण्डमान होम" की एक शाखा उस समय बाराटाँग में भी खोली गई थी।

ब्रिटिश सरकार ने जब पहली बार दिसम्बर सन १७८८ ई० में तत्कालीन भारतीय नौसेना के लेफ्टिनेंट आर्कीबाल्ड ब्लेयर को अण्डमान भेजा तो सर्वेक्षण के दौरान १६ मार्च सन् १७८९ ई० को लेफ्टिनेंट ब्लेयर ने बाराटांग द्वीप का भी सर्वेक्षण किया था। इस द्वीप का उल्लेख लेफ्टिनेंट ब्लेयर द्वारा भारत के तत्कालीन गवर्नर जनरल लार्ड कार्नवालिस को भेजी गयी रिपोर्ट में किया गया हैं. जो ९ जून १७८९ को एक पत्र द्वारा भेजी गई थी। *

बाराटांग की संकरी खाड़ी काफी लम्बे समय से जिज्ञासुओं एवं भूगोल-वेत्ताओं के लिए संक्षिप्त जलमार्ग के रूप में प्रयोग होती रही। क्योंकि पोर्ट ब्लेयर पहुँचने के लिए खुले समुद्र की अशांत अवस्था में छोटी-छोटी नौकाओं के द्वारा अन्तर्द्वीपीय यात्रा करना अपेक्षाकृत असुविधाजनक रहता था। अतः बाराटांग की खाड़ी वाला जलमार्ग अधिकांशतः प्रयोग किया जाता था।

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान पूरे द्वीपसमूह पर जापानियों का आधिपत्य हो गया। ब्रिटिश सरकार रातों-रात अण्डमान छोड़ देने के लिए बाध्य हो गई। किन्तु ब्रिटिश सरकार अण्डमान छोड़ देने की बात आसानी से भुला नहीं पा रही थी अत. अण्डमान-निकोबार से जापानियों का सफाया करने के लिये ब्रिटिश अधिकारियों ने जासूसी के हथकण्डे को अपनाया ताकि जापानियों की शासन व्यवस्था में व्यवधान उपस्थित हो सके।

अपनी योजना को सार्थकता प्रदान करने लिए ब्रिटिश सरकार ने

---

* माथुर, एल० पी०— "हिस्ट्री आफ अण्डमान एण्ड निकोबार आईलैंण्ड" (पृष्ठ 47)

डी० मैकार्थी को चुना जो उस समय उत्तर प्रदेश के रायबरेली जिले में एक अधिकारी के पद पर नियुक्त था। मैकार्थी को अविलम्ब ही अण्डमान पहुँचकर जासूसी करने का संदेश मिला। जापानियों की विभिन्न गतिविधियों की गुप्त जानकारी देने का उत्तरदायित्व निबाहने के लिए स्वामिभक्त मैकार्थी अण्डमान आ पहुँचा। अपनी गुप्त सूचनाओं के सफल संचालन के लिए मैकार्थी ने सुरक्षा के दृष्टिकोण से बाराटांग द्वीप को ही अपना कार्यक्षेत्र बनाया। मैकार्थी से प्राप्त गुप्त संदेशों के आधार पर ब्रिटिश गतिविधियों में तेजी आई। जिसके परिणाम स्वरूप जापान की ओर से रसद एवं सैन्य-सामग्री लाते हुये जापानियों के जलयान पोर्ट ब्लेयर पहुँचने से पूर्व ही समुद्र के गर्त में समाने लगे।

जापानी इस रहस्य को समझ भी नही पा रहे थे कि उनके जहाजों के आने और जाने की गुप्त सूचना देने वाला जासूस बाराटांग द्वीप में रहकर अपनी जासूसी-गतिविधियों का संचालन कर रहा है। इस तथ्य का उद्घाटन डी. मैकार्थी ने अपनी रिपोर्ट* में किया है।

डी ए. मैकार्थी ने अपने साथियों — हबीब शाह, ज्ञान सिंह, दो राँची कुली, सार्जेण्ट डिकन्स एवं हवलदार जोसफ बारला के माध्यम से अपनी जासूसी गतिविधियों में सफलता प्राप्त की थी। इस समय घने जंगलों में मार्ग-संकेत अंकित कर देने से उन लोगों को आने में सुविधा रहती थी। इस प्रकार के संकेत आज भी बाराटांग के निकटवर्ती द्वीप — "ब्लफ द्वीप"— की पाषाण शिला पर देखे जा सकते हैं... ...

8 ___ 3 ___ 33

3678

8 x 9 x 38

---

* डी० ए० मैकार्थी द्वारा प्रेषित रिपोर्ट एम० एल० एस०, ई० ए० आर० एफ० 161/3/54 पर आधारित।

P(4 8 3 8 6 × 8 7)

O L - S - Y - H A 7 8

3 6 1 2 3 6 2 2

3 6 7 3 3 8 2 2

L M H 4 7 2 9 0

1 9 3 8 3 8 2 1 4 1 7 9 3 8

9 7 1 6

18 10 38

3 2 4 7

इसके अतिरिक्त अन्य कुछ संकेत लेखक के लिए पढ़ पाना सम्भव न हो सका क्योंकि वे काफी अस्पष्ट हैं।

द्वीप के उत्तरी-पूर्वी छोर पर स्थित जापानी शासन-काल की जेट्टी एवं मोर्चे आज भी अपनी जीर्णावस्था में अपना आंशिक अस्तित्व बनाये हुए हैं। जेट्टी के पास ही पड़ा हुआ बुलडोजर आज भी जापानी शासन के दौरान में बाराटांग द्वीप की महत्ता का संकेत दे रहा है। इस विषय में मैं एक सत्य घटना का उल्लेख करना चाहूंगा ... ...

अक्टूबर 1979 का वर्ष। एक अपरिचित विदेशी नागरिक नीलाम्बुर जेट्टी पर उतरा। उसने अपनी डायरी में से एक पुराना पत्र निकाला। पत्र में बनाये गये मानचित्र को सामने रखकर उसमें अंकित संकेतों से द्वीप की स्थिति का अनुमान लगाने लगा। लेकिन उस अपरिचित के अनुरूप संकेतों से द्वीप की स्थिति मेल नहीं खा रही थी। असमंजसता में पड़े विदेशी ने पास खड़े व्यक्ति को अपना वह पत्र दिखाया जो उसके पिता ने सन् 1944 में अपने पुत्र को सम्बोधित करते हुए वह लिखा था। नवागन्तुक विदेशी पत्र में बने मानचित्र के उस बिन्दु की जान-

कारी प्राप्त करना चाह रहा था जिस पर वह जेट्टी बनी हुई थी। (इसी जेट्टी का उल्लेख ऊपर के वर्णन में है)। किन्तु जंगली झाड़ियों एवं कीचड़-युक्त समुद्री किनारों के कारण उस जेट्टी तक पहुंच पाना सुगम न था। अपनी जिज्ञासा के बल पर तो वह स्वदेश से बाराटांग तक की यात्रात्रा पूरी कर चुका था। अतः 10-12 किलो मीटर लम्बा कंटीला एव कीचड़-युक्त मार्ग भी येन-केन-प्रकारेण पैदल चलकर तय करने के लिए वह तत्पर था। उसके साहस को देखकर बस्ती के कुछ लोग भी उसके साथ चल दिये। 10-12 किलो मीटर का दुरुह मार्ग पार कर सब उस अजनबी के गन्तव्य तक जा पहुँचे। गन्तव्य पर पहुँच कर उसने अपनी डायरी से फिर वही पत्र निकाला, और उसमें अंकित स्थानों तथा सीमाओं का मिलान धरातलीय स्थानों एवं सीमाओं से करने लगा। उसकी आँखों से अश्रुधारा प्रवाहित हो चली। उसकी भावुकता-वश निकले हुए आँसुओं को देखकर लोगों ने उसके वहाँ आने और इस प्रकार रोने का प्रयोजन पूछा। पूछने पर उसने अंग्रेजी में बताया जिसका भाव इस प्रकार है "मेरे पिताजी 1942 ई० से अण्डमान में रह रहे थे- एक कर्मठ प्रहरी के रूप में। यही बाराटांग द्वीप उनकी कार्यस्थली थी। और इसी जेट्टी तथा मोर्चे पर रहकर वह जापानी सरकार की सेवा करते थे। इसी बीच वह बीमार पड़ गये किन्तु उन्होंने इस स्थिति में भी आराम करना उचित न समझा। अपनी बीमारी की जानकारी तथा इस अवस्था में भी ड्यूटी पर तैनात रहने के आशय का यह पत्र मुझे लिख भेजा। इसमें उन्होंने यह भी आशंका व्यक्त कर दी थी कि मैं शायद जीवित स्वदेश न पहुँच सकूँगा। मेरे प्राणों का अन्त इसी द्वीप की भूमि पर होगा, ऐसा मुझे आभास होता है। लेकिन मेरे मन में बार-बार एक ही इच्छा जागृत होती है कि हे मेरे पुत्र! यदि परिस्थिति अनुकूल हो तो तुम एक बार बाराटांग अवश्य आना, और देखना कि तुम्हारा कर्त्तव्यनिष्ठ पिता कैसे निर्जन एवं

एकान्त स्थान पर रहकर देश-सेवा कर रहा था। इतना कहते-कहते उसका गला रूँध आया था। वह बार बार यही कहता जा रहा था कि यह स्थान मेरे लिये किसी पूजा-स्थल से कम नहीं है।

(उपर्युक्त वर्णन से हम भावनात्मक धरातल पर बाराटांग द्वीप की महत्ता समझ सकते हैं।)

बाराटांग का आधुनिक इतिहास उस समय से शुरू होता है, जब स्वतन्त्रता प्राप्ति के कुछ दिनों बाद द्वीपों में भी विकास की गतिविधियाँ शुरू हुई। पुनर्वास-योजना के अन्तर्गत द्वीपों में भी पूर्वी पाकिस्तान (बंगला देश), बिहार एवं मध्य प्रदेश के लोगों को लाकर बसाया गया उनमें बिहार एवं मध्यप्रदेश के सीमावर्ती क्षेत्रों के लोग प्रमुख हैं। बाराटांग द्वीप में उदयगढ़ (फ्लेट बे) की बंगाली बस्ती को छोड़कर शेष सैटलर्स "राँची" नाम से जाने जाते हैं। सन 19 9 ई० में कुल 142 परिवारों को लाकर पहली बार सैटलर्स को बसाने का कार्य शुरू किया गया। उपर्युक्त 142 परिवारो को निम्नलिखित गांवों में बसा दिया गया

क्र० सं०	गाँव का प्रचलित नाम	सरकारी अभिलेखों में गांव का नाम	बसाये गये परिवारों की संख्या
1.	नीलाम्बुर	नीलाम्बुर	बाराटांग द्वीप का मुख्यालय
2.	बीचडेरा	अभयगढ़	7
3.	रोगला चांग	रोगला चांग	6
4.	जारवा क्रीक	नया गढ़	24
5.	कटान	रजतगढ़	18
6.	रफ्टास क्रीक	रफ्टास क्रीक	2
7.	खट्टा खाड़ी	खट्टा खाड़ी	6
8.	साउथ क्रीक	सुन्दर गढ़	36
9.	बम्बू नाला	कंचन गढ़	12
10.	फ्लट बे	उदयगढ़	8
11.	बोलचा	विजयगढ़	23
		कुल योग	142

इसके अतिरिक्त बाद में 39 परिवारों को "अडाजिक" गाँव में लाकर बसा दिया गया। रेवन्यू रिकार्डों से पता चलता है कि बस्ती बसाये जाने के समय प्रत्येक कृषक-परिवार को 10 एकड़ पहाड़ी एवं समतल (कृषि योग्य) भूमि वितरित की गई। इसके अलावा रियायती दर पर घर बनाने के लिये लकड़ी एवं लोहे की टिन की चादरें दी गई। कृषि के लिये रियायती मूल्य पर हल-बैल इत्यादि भी दिये गये।

बाराटांग द्वीप के मुख्यालय के रूप में नीलाम्बुर को विकसित किया गया। अन्तर्द्वीपीय यातायात के लिए नीलाम्बुर में लकड़ी की जेट्टी बनाई गई। विभिन्न विभागों से सम्बन्धित सरकारी कार्यालय भी नीलाम्बुर में खोल दिये गये। जारवा आदि के आक्रमण से सुरक्षा हेतु अपेक्षित स्थानों पर बुश-पुलिस की चौकियाँ स्थापित कर दी गयीं।

विकास की प्रक्रिया में बाराटांग द्वीप भी अन्य द्वीपों के साथ साथ कदम से कदम मिलाकर चलता रहा है। आज वहाँ पर "राँची" लोगों के अतिरिक्त अन्य वर्गों के लोग भी -- सरकारी कर्मचारी, व्यापारी श्रमिक आदि के रूप में निवास करते हैं। विकास की विभिन्न एजेन्सियों के रूप में आज बाराटांग में उपवनपाल का क्षेत्रीय कार्यालय, अण्डमान सार्वजनिक निर्माण विभाग का "सब डिवीजनल ऑफिस", वरिष्ठ माध्यमिक, माध्यमिक एवं प्राथमिक विद्यालय, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, पटवारी एवं रेवन्यू निरीक्षक का कार्यालय, राज्य परिवहन सेवाओं की कार्यशाला, नीलाम्बुर एवं गाँधीघाट जेट्टी, पुलिस चौकी, अन्तर्द्वीपीय पुलिस बेतार केन्द्र, पशु-चिकित्सालय, डाकघर, राज्य सहकारी बैंक की एक शाखा, सामुदायिक सभागार, विद्युत-विभाग का पावर हाउस, कृषि-विभाग का कार्यालय, वन विभाग एवं ए० पी० डब्ल्यू० डी० के विभागीय अतिथि गृह आदि तो हैं ही साथ ही धर्म और संस्कृति के रूप में मन्दिर एवं गिरजाघर भी हैं।

मनुष्य के जीवन में वातावरण का प्रभाव अपना विशेष महत्व रखता है। बाराटांग में निवास कर रहे रांची सैटलर्स के सांस्कृतिक अध्ययन से पूर्व यह आवश्यक हो जाता है कि बाराटांग में चल रही विभिन्न विकासीय गतिविधियों एवं विकास की एजेन्सियों के विषय में अपेक्षित जानकारी प्राप्त कर ली जाए।

वन विभाग :—

अण्डमान के विषय में यदि यह कहा जाए कि यदि यहाँ पर वन न होते, तो न तो यहाँ मानव आकर्षित होता और न उसका जीवन-यापन होता। अण्डमान के वनों ने रहने के लिये मकान, यातायात के लिए नावें, जहाज आदि और भोजन पकाने के लिये केवल लकड़ी ही नहीं दी हैं अपितु वन-विभाग के रूप में एक ऐसी सम्पत्ति भी सौंपी हैं, जिसने एशिया के सबसे बड़े "सॉ-मिल" चाथम सॉ–मिल) को स्थापित किया। अण्डमान में बन्दी बस्ती बसाये जाने के साथ ही साथ यहाँ के वनों का भरपूर मात्रा में प्रयोग किया जाने लगा। धीरे धीरे सन् 1883 में यहाँ वन विभाग एक स्वतन्त्र विभाग के रूप में कार्य करने लगा। लकड़ी की चिराई-कटाई के लिये चाथम द्वीप* में सॉ मिल स्थापित कर दिया गया। अण्डमान में घने जंगलों में से हाथियों का प्रयोग तो किया ही जाता था किन्तु इंजनचालित ट्राम आदि के लिये ट्राम-लाइनें भी बिछाई गयीं।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद अन्य द्वीपों की भाँति बाराटांग में भी वनविभाग ने अपना कार्य शुरू किया। पडॉक, गर्जन, चुगलम जैसे वृक्षों को काटना तथा उनके स्थान पर पुनः सागौन एवं पडॉक के वृक्षों

* चाथम द्वीप पोर्ट ब्लेयर का निकटतम छोटा-सा द्वीप है। आर्कीबाल्ड ब्लेयर ने सबसे पहले इस द्वीप की खोज एक बन्दरगाह के रूप में की। और इसे उस समय पोर्ट कार्नवालिस के रूप में जाना जाता था।

के रोपण करने का कार्यक्रम शुरू हो गया। वन-विभाग के मजदूरों के रूप में मुख्य रूप से "राँची" लोग ही रहते हैं। आज जो बाराटांग में सैटलर्स के रूप में रह रहे हैं, उनमें से बहुत से इसी द्वीप में वन-विभाग के मजदूर के रूप में कार्य कर चुके हैं। शुरू-शुरू में बाराटांग को विम्बर्लीगंज क्षेत्र के अन्तर्गत रखा गया। किन्तु अब वहाँ पर उपवनपाल का कार्यालय स्थापित हो गया है। पवाजिक, मिडिल स्ट्रेट, रफ्टास क्रीक, नीलाम्बुर और लोरोजीनाला आदि में "वन-शिविर" स्थापित किये गये हैं। नीलाम्बुर में वन-विभाग का अतिथि गृह, खेल का मैदान तथा उपवनपाल का मुख्यालय है। बाराटांग के समीपस्थ छोटे-छोटे द्वीप भी बाराटांग डी० एफ० ओ० के अधिकार क्षेत्र में आते हैं। घने जंगलों से लकड़ी के लट्ठे निकालने के लिये हाथी तो प्रयोग किये ही जाते हैं। किन्तु जेट्टी में बेड़ में सहयोग देने हेतु हाथियों की भूमिका देखते ही बनती है। इन बेड़ों को खींचकर पोर्ट ब्लेयर लाया जाता है। बाराटांग के वनों से बेंत भी काफी मात्रा में निकाला जा रहा है।

वन विभाग में कार्य करने वाले मजदूरों की अनेक बस्तियाँ हैं। जिनमें मिडिल स्ट्रेट (वन-शिविर), रफ्टास क्रीक, नीलाम्बुर (वन-शिविर), साउथ क्रीक (वन-शिविर), झरना नाला (वन-शिविर), लारोजी कैम्प, पवाजिग आदि प्रमुख हैं। हाथियों के महावत और फोरेस्ट गार्ड आदि भी जगह जगह इन्हीं वन शिविरों मे निवास करते है। दिनभर कठिन से कठिन कार्य करने के बाद विश्राम करने के लिये हाथियों को स्वच्छन्द रूप से विचरण करने हेतु जंगल में छोड़ दिया जाता है। अगले दिन हाथी को आसानी से ढूँढा जा सके, इसके लिए महावत हाथी के गले में घन्टी बांध देते हैं। कभी-कभी महावत के लिए बड़ा मुश्किल हो जाता है जबकि हाथी समुद्री खाड़ी को पार करके निषिद्ध जारवा क्षेत्र

में प्रवेश कर जाता है। महावत अपनी जान की परवाह किये बिना चलता रहता और हाथी को खोज लाता है। किन्तु कभी कभी स्थिति विचित्र हो जाती है जबकि चालाक हाथी लकड़ी ढोने के कठिन कार्य से बचने के लिये आराम करना चाहता है उसके लिये आवाज करने वाली घण्टी को सूँड में बड़ी चतुराई से दबा लेता है ताकि आवाज तक न हो। किन्तु फिर भी कहा जा सकता है कि वन-विभाग के हाथी विभाग की रीढ़ की हड्डी है।

राजकीय बी० एड० कालेज,
पोर्ट ब्लेयर

जाति

- ❀ एक घर
- ❀ तीन साहित्यकार
- ❀ दो वैष्णव
- ❀ एक क्रिश्चिन
- ❀ भोजन का समय
- ❀ नियमानुसार चौके में भोजन होना
- ❀ विदेशी के भोजन की
- ❀ समस्या खड़ी हो गई
- ❀ छोटे भाई ने पूछा
- ❀ बड़े ने कहा
- ❀ जाति न पूछो साधु को
- ❀ और भोजन चौके में ही हुआ
- ❀ यह विदेशी कवि थे महान हिन्दी प्रेमी फादर कामिल बुल्के
- ❀ और भोजन करा रहे थे राष्ट्र कवि स्व० मैथिलीशरण गुप्त।

(जर्जर कश्ती से साभार)

❁ तूर्यनाद ❁

— बालकृष्ण गर्ग

तरुण ! सूर्य का तूर्यनाद है, अरूण वितान तना !

कलुष-कला को तोड़ दो,

निद्रित प्राण झिंझोड़ दो,

कर्म-क्षेत्र को गोड़कर—

उद्यम को निज क्रोड़ दो !

आदिकाल से श्रम द्वारा ही मृन्मय स्वर्ण बना !

तरूण ! सूर्य का तूर्यनाद है, अरूण वितान तना !

द्वेष-क्लेश सब झाड़ दो,

डाह-कुराह उजाड़ दो,

रोष-कोष को गाड़कर—

मद-पद पकड़ पछाड़ दो।

जीवन हो अति अमल, सरल, उज्जवल, सुस्नेह-सना !

तरुण ! सूर्य का तूर्यनाद है, अरूण वितान तना !

मुख उदास को मोड़ दो,

प्रबल आश को जोड़ दो,

नव प्रकाश अब छोड़कर—

तमः पाश को तोड़ दो !

मृत से अमृत, अनृत से ऋत की ओर चरण धरना !

तरुण ! सूर्य का तूर्यनाद है, अरूण वितान तना !

'शाकुन्तलम्', 647-गंगाधर गली,
मुरसान द्वार, हाथरस (उ० प्र०)-204101

पृथ्वी पर जीवों की उत्पत्ति
एक प्रश्न

— डा० टी० सी० खत्री

पृथ्वी जीवन का आधार है। पृथ्वी पर जीव की उत्पत्ति करोड़ों वर्ष पूर्व हुयी, पर क्या जीवों का प्रारुप वही था जो आज हम देखते हैं। लाखों प्रकार के जीव-जन्तु वह असंख्य पौधे जो पृथ्वी अपने आँचल में समाये है, वे क्या इसी रूप में पृथ्वी पर उत्पन्न हुये या इनका यह वर्तमान स्वरूप विकास का परिणाम है? इस प्रश्न का उत्तर इतना आसान नहीं है। जितना हम सोचते हैं। साथ ही समस्या की सही-सही व्याख्या भी आजतक वैज्ञानिक करने में असफल रहे हैं। इस प्रश्न का उत्तर इस लेख में देने का प्रयत्न किया गया है।

जीव की उत्पत्ति को समझने के लिए सर्वप्रथम ऐतिहासिक सिद्धांतों पर एक दृष्टि डालनी होगी क्योंकि ये सिद्धांत ही बाद में आधुनिक सिद्धांतों के लिए आधार बने। इसी नींव के आधार पर 19 वीं व 20 वीं शताब्दी के वैज्ञानिकों ने विभिन्न प्रयोगों द्वारा अपने सिद्धांत प्रतिपादित किये। इस संदर्भ में पहला सिद्धांत 'विशेष उत्पत्ति' का सिद्धान्त है। इसके अनुसार भगवान या किसी अलौकिक शक्ति ने पृथ्वी पर जीवों का निर्माण किया, इसी स्वरुप में जिसमें आज हम देखते है। यद्यपि परमात्मा के इस सिद्धांत पर चार्ल्स डार्विन ने गहरा प्रहार करके एक नया सिद्धांत, जिसे जीवों के क्रमिक विकास का सिद्धांत कहते हैं दिया जो एक प्रतिपादित सत्य है।

दूसरा सिद्धांत 'अकस्मात निर्माण' या निर्जीव कार्बनिक पदार्थों के निर्माण का सिद्धांत है। इसमें यह सिद्ध करने का प्रयास किया गया है कि जीव अचानक पृथ्वी पर दूसरे ग्रह या आकाशगंगा से बीज या सूक्ष्म जीव के रूप में पृथ्वी पर गिरे या वर्षा, तथा ब्रह्माण्डीय धूल के रुप में आकाशमार्ग से पृथ्वी पर आये। कुछ जीव गीली मिट्टी, तापमान के परिवर्तन या संयोग से उत्पन्न हुए। इस सिद्धांत का खण्डन लेमार्क, स्पालान्जली तथा पाश्च्यूर आदि वैज्ञानिकों ने अपने प्रयोगों के माध्यम से किया।

तीसरा सिद्धांत, जीवन के आंतरिक सिद्धांत पर आधारित है जिसमें जीव न तो पैदा किया जा सकता है न ही नष्ट। वरन् समय-समय पर उसका स्वरूप बदलता है। इसके आधार पर जीव की उत्पत्ति कभी भी निर्जीव पदार्थों से नहीं हुई। इसमें इस बात पर बल दिया गया है कि जीव पृथ्वी पर किसी अन्य रुप में था या ब्रह्माण्डीय उल्काओं से बीज, कण या शुक्राणु के रूप में पृथ्वी पर आया। परन्तु आधुनिक दृष्टिकोण रखने वाले आज के वैज्ञानिक तो क्या आम आदमी भी यह बात मानने को तैयार नहीं होगा। चौथा, आधुनिक सिद्धांत है, इसमें वैज्ञानिकों ने विभिन्न परिकल्पनाओं व प्रयोगों का सहारा लिया है। इसमें सबसे पहली कल्पना रूस के जीव वैज्ञानिक आपेरिन की है। उनकी पुस्तक 'जीवों की उत्पत्ति' जो 1956 में प्रकाशित हुई मिलती है। आपेरिन ने अणुवीय भार के रासायनिक अणुओं में कौअरसेटिव की कल्पना जीवों की उत्पत्ति के लिये की। इसमें पृथ्वी की उत्पत्ति सूर्य से होने तथा उच्चतम ताप पर पूर्वग्रहीय तत्व जैसे डाईकार्बस, साइनोजन, मिथेन इत्यादि की उपस्थिति और आक्सीजन का अभाव परन्तु आक्साइड की उपस्थिति, अमोनिया का निर्माण, कार्बनिक यौगिकों का निर्माण, विशेषकर हाइड्रोकार्बन तथा उससे निर्मित यौगिक, जटिल कार्बनिक यौगिकों की संरचना, गर्म तरलीय साबुनों का निर्माण जो बाद में विभिन्न प्रक्रियाओं द्वारा पूर्व प्रोटिन यौगिकों में बदल गये। इस क्रिया में संघनन, पालीमराइजेशन, आक्सीकरण तथा अपचय का महत्वपूर्ण योगदान है। यही पूर्व

प्रोटीन सबसे पहले जीवित अणु में बदले। इसके पश्चात सबसे पहले जीव की उत्पत्ति पूर्व जीवित अणु से हुयी होगी ऐसा आपेरिन का अनुमान है।

यह तथ्य सर्वविदित है कि किसी भी क्रिया के लिये उर्जा की आवश्यकता होती है अतः पूर्व कथित रासायनिक क्रियाओं के लिए उर्जा कहाँ से मिली होगी! इसके लिए अल्ट्रा वायलेट किरणों के द्वारा उर्जा मिली ऐसा आपेरिन ने बताया। इस सिद्धांत के अनुसार सम्भावित पूर्व जीव बैक्टिरिया की तरह होगा, जिसका नाम उन्होंने नाइट्रोसोमोनास रखा जो स्वतः प्रकाश संश्लेषण की क्रिया में अक्षम था।

पाँचवां सिद्धांत जीव की रासायनिक उत्पत्ति का है। यह सिद्धांत सर्वाधिक प्रभावी व सत्य के नजदीक आता है। इसका सूत्रपात 19 वीं सदी में हुआ जब ए० एम० बटलरोव ने चूने के पानी को फार्मल डिहाइड के साथ उष्ण स्थान पर रखने से शक्कर का निर्माण किया। इसी प्रकार ए० एन० बैश ने तरलीयफार्मलीन तथा पोटेसिंथ साइनाइट से प्रोटिन तैयार किया। ये दोनों ही पदार्थ कोशिका के निर्माण के मूल पदार्थ हैं। आधुनिक विचार धारा के अनुसार अमोनिया से अमीनो अम्ल तथा अमीनोअम्ल से पालीपेप्टाइड बने जो बाद में प्रोटिन में बदल गये। वैज्ञानिकों के अनुसार ये सभी क्रियाएँ जल में ही हो रही थी जो सही भी है।

जीव की उत्पत्ति के बारे में प्रशंसनीय प्रयोग एस० एल० मिलर ने 1953 में किया। इन्होंने मीथेन, अमोनिया, हाइड्रोजन तथा पानी के मिश्रण को, समझा जाता है कि उस समह जब जीन की उत्पत्ति हो रही थी, वायुमंडल में उपस्थित थे, उसपर विद्युत प्रवाह किया गया। इसके लिए मिलर ने एक बहुत ही सरल उपकरण काम में लिया। इस प्रयोग को एक सप्ताह तक चलने के बाद जो यौगिक उत्पन्न हुए वे सब प्रोटिन बनाने के लिए आवश्यक यौगिक थे। इस प्रयोग से जीव के उत्पत्ति की संभावनायें बढ़ गयीं।

इसी प्रकार बाद में प्यूरोडीन व पाइरीडीन जैसे जटिल यौगिक निर्मित किए गए जो जीवन के आधार 'जीन्स' की मुख्य संरचना के यौगिक हैं।

इस संदर्भ में फोक्स व हारडे का सूक्ष्ममंडलीय सिद्धांत जो 1961 में दिया काफी सही लगता है।

इन सिद्धांतों का अगर हम सम्मिलित रूप से विवेचन करें तो कह सकते हैं कि सबसे पहला जोव 'जीन्स' था क्योंकि जीन्स अपने आप कार्य नहीं कर सकता है जैसा की वाइरस में होता है, अतः इसके लिए केन्द्रक के साथ जीवद्रव्य (साइटोप्लाज्म) का होना अति आवश्यक है। इसी क्रम की अगली कड़ी नाभिकीय प्रोटीन की उत्पत्ति या डी० एन० ए० की उत्पत्ति रासायनिक प्रक्रियाओं द्वारा हुई तथा प्रथम डी० एन० ए० अणु का निर्माण भी इसीप्रकार हुआ। इसी प्रकार कोअरसेटिव ने जीवद्रव्य (साइटोप्लाज्म) निर्माण किया। अचानक दोनों पदार्थों का समुद्र में आकस्मिक मिलन हुआ और प्रथम जीव की उत्पत्ति हुयी। प्रथम जीव का नाम पाइरो के अनुसार 'बायोपाइसिस' होना चाहिए जिससे 'बायोपायोजेनेसिस' की प्रक्रिया के द्वारा 'न्यूबायोज़ेनेसिस' का निर्माण हुआ इससे ही आगे जाकर विभिन्न जीवों का निर्माण हुआ।

अति आधुनिक सिद्धांत जो 1982 में डा० क्रीक ने अपनी पुस्तक 'जीवन- उसकी उत्पत्ति और प्रकृति' में दिया है। ये वही वैज्ञानिक हैं जिन्हें डी० एन० ए० की परमाणुविक संरचना के लिए नोबल पुरस्कार मिला। इनके अनुसार जीवन ब्रह्मांड के किसी ग्रह पर उत्पन्न हुआ, क्योंकि पृथ्वी की प्रारम्भिक परिस्थितियाँ जीव की उत्पत्ति के लिये अनुपयुक्त थी। उपयुक्त परिस्थिति होने पर जीव सूक्ष्म जीवों के रूप में पृथ्वी पर आये। यद्यपि इस बात का प्रमाण देने में वे भी अक्षम हैं। हाँ पृथ्वी पर जीव की उत्पत्ति एक अति आसाधारण घटना है। अगर इसे चमत्कार की संज्ञा भी दी जाए तो अनुचित नहीं होगा।

अब कुछ मूल प्रश्नों पर विचार करना चाहिए। यह निश्चित हो गया है कि जीव सर्वप्रथम एक कोशीय ही रहा होगा। अतः इसका अध्ययन करने पर यह दो भाग-केन्द्रक तथा जीव द्रव्य का बना होता है और कोशिका की

मुख्य क्रिया प्रकाश संश्लेषण हैं जो एक जटिल प्रक्रिया है जिसमें डी. एन. ए. व आर. एन. ए. का मुख्य सहयोग होता है। अब प्रश्न यह है कि इन सबको सुचारु रूप से क्रियान्वित करने के लिए कोड की आवश्यकता होती है। इसका तात्पर्य यह हुआ, कि पहले डी० एन० ए० बना या आर० एन० ए०। सम्मवतः अबसे पहले आर० एन० ए० बना। क्योंकि आर० एन० ए० अस्थायी है जिसे स्थाई रूप देने के लिए ही डी० एन० ए० की संरचना हुई।

अन्त में मैं कहूंगा कि कोअरसेटिव से जीवद्रव्य बना तथा सूक्ष्म मंडल से केन्द्रक और सर्वप्रथम विषाणु जैसे जीव की उत्पत्ति हुई। पुनः अचानक केन्द्रक व जीवद्रव्य मिल गये तथा एक कोशीय जीव की उत्पत्ति हुई। परन्तु ये सभी परिकल्पनाएँ हैं सत्य क्या है अभी कह पाना मुश्किल हैं। 20 वीं सदी के वैज्ञानिक तो जीव की उत्पत्ति का सही विवरण समझाने व लिखने में असमर्थ रहे हैं। आशा है 21 वीं सदी के वैज्ञानिक इस जटिल समस्या का समाधान अवश्य निकालेंगे तथा अपनी तीव्र बुद्धि की कुशलता का परिचय देकर जीवन की इस जटिल समस्या का समाधान करके हमारी भावी पीढ़ी को एक और सत्य की जानकारी देंगे।

गीत

— चक्रधर नलिन

शाम घिरती, लक्ष्य मजबूरी !
घिर रहे नभ, मेघ कर्पूरी !

दौड़ता आकाश
खींचता वन, वन, अरुण पलाश
पंथ यात्राभास
सही के मन तीव्र मोह तलाश
नियति - सीमा बीच में दूरी।

घिरी स्मृतियां
छूटती पल, समय दिक - गतियाँ
जागता विश्वास
शून्य उड़ती काल - विकृतियां
गूँजती दिशि, सुपद-ध्वनि तेरी।

प्राप्ति का आधार
भिन्न रूपों के विविध विस्तार
स्वल्प वय, जीवन
बांधता सत्ता सतत - संसार
हर अहर्निशि वृत्ति कब पूरी।
शाम घिरती, लक्ष्य मजबूरी।

246 प्रभुटाउन, रायबरेली
उ० प्र० - 229001

□ कैसे स्वागत करूँ तुम्हारा ? □

— नीति पाल अत्री 'सुदर्शन'

आशाओं को ग्रहण लगा हो, चित्त व्यथित हो-हृदय जला हो !
ऐसे में मधुमास ! बताओ कैसे स्वागत करूँ तुम्हारा ?

प्रश्नों का अम्बार लगा है,
उत्तर एक नहीं मिलता है
उत्तर मिल भी जाए तो क्या—
सु समाधान नहीं मिलता है।

आहत जन-मानस का मन हो· सहमा-सहमा सा जीवन हो !
ऐसे में ऋतुराज ! बताओ कैसे स्वागत करूँ तुम्हारा ?

मौन हुए धृतराष्ट्र अभी-भी,
विचलित द्रोण, प्रभाव नहीं है !
नहीं मिटी पाञ्चाली-पीड़ा—
भरा अभी तक घाव नहीं है।

खून के आँसू दिल रोता हो, साँस-साँस में भय सोता हो !
ऐसे में मधुमास ! बताओ कैसे स्वागत करूँ तुम्हारा ?

यौवन अपना दिशाहीन है,
संस्कार उपहास बने हैं !
नीलगगन है लाल लहू से—
पत्थर लेकर सभी तने हैं।

दुश्मन अपना खून बना हो, छाया जब आतंक घना हो !
ऐसे में ऋतुराज ! बताओ कैसे स्वागत करूँ तुम्हारा ?

पंखुड़ियों में तपन वहुत है,
फूल दहकते अंगारे हैं !
अभिनंदन बमदार हो गये—

किले बन गये गुरुद्वारे हैं।
मस्जिद भी जब पाक नहीं हो, मन्दिर में शुचि वाक नहीं हो !
ऐसे में मधुमास ! बताओ कैसे स्वागत करूँ तुम्हारा ?

तुम कहते हो- छँद रचूँ मैं ?
नाचूँ गाऊँ झूम उठूँ मै ?
प्रेमगीत की तान सुनाऊँ ?
कविता में मधु रस टपकाऊँ ?

मैं तो केवल रो सकता हूँ, नहीं तुम्हारा हो सकता हूँ !
तुमने रोना सीखा ही कब, हँसमुख सदा स्वभाव तुम्हारा !!
कैसे स्वागत करूँ तुम्हारा ?

आदर्श डाकघर, फैक्ट्री एरिया
फरीदाबाद-121001 (हरि०)

"रौशनी तलाशते अँधेरे"

— डी० एम० सावित्री राव

रात छिपाने की चीज नहीं है, फिर भी उसकी छत्रछाया में लोग अपनी तत्परता को कभी-कभी नींद में और कभी-कभी आदान-प्रदान के जोश में छिपा देते हैं। जबकि खोजबीन के गवाह जानकर इसका भांडाफोड़ नहीं करना चाहते। शायद गूँगा होकर जीने और अच्छी बुरी हरकतों को देखते रहने में ही लोग अपनी जिन्दगी की बची-कुची ताकत लगाकर परिस्थिति के इल्जाम का मुजरिम बने रहना चाहते हैं। नींद अचानक ही खुल गई, वह उठ बैठी, लेकिन चारों तरफ खामोशी थी। उसके कानों से अन्धकार का सन्नाटा टकराता रहा। लेकिन रात कहाँ आकर ठहर सी गई कुछ ठीक-ठीक पता नहीं रात के अन्धेरे में रौशनी की किरण तलाशती रेवती दीवार से चिपकी बिजली का बटन ऊपर नीचे करती है, फिर भी अंधेरा है। दो एक बार फिर प्रयत्न करती है शायद बिजली नहीं है। इधर कई दिनों से ऐसा ही चलता है, दिन-दिन भर बिजली गायब रहती है। कभी आती भी है तो रात गहराने तक लौट जाती। उसने अंधेरे में ही टटोला दियासलाई पास ही मेजपर मोमबत्ती के साथ पड़ी थी, हाथ आ गई। उसने सम्भलते हुए मोमबत्ती सुलगा कर कमरे में फैले अंधकार को रौशनी में बदलने की कोशिश की। काश उसका जीवन वस्तुपरक होता जिसकी पकड़ उन्मुक्त और जिसकी आशाएँ व्यापक होती।

बाहर हवा तेज थी, बीच बीच में हवा कमरे के भीतर घुस आती और जलती हुई मोमबत्ती लपलपा कर बुझती सी अधजली हो

जाती। नहीं नहीं इसे जलते रहना चाहिये. यही चोहत रेवती के सुख का स्त्रोत है। साथ ही यह तथ्य भी कि ये सुख उसे वास्तविकता के खुले मंच पर लाकर खड़ा कर देता है, जहाँ से वह अपने भूत भविष्य और वर्तमान को अच्छी तरह टटोल कर जिन्दगी की सही तस्वीर को सयझने की कोशिश करती। वह जानती थी कि अंधकार में रहने वालों को रौशनी बड़ी मुश्किल से नसीब होती है।

जब रेवती बी० ए० की छात्रा थी, पिता का छाया सर से उठ गया घर पर माँ और चार छोटे भाई थे। पिता एक अच्छे सम्पादक थे। पूरा शहर उनके नाम से परिचित था। "रौशनी तलाशते अंधेरे" मासिक पत्रिका साहित्य भावना के उजागर करने में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ती। अपार जन समुदाय की प्रिय पत्रिका "रौशनी तलाशते अंधेरे", किन्तु पिता के बाद इतने बड़े कार्य का भार रेवती के बस का नहीं था। भाई सभी बहुत छोटे थे; वह अकेली चाहकर भी कुछ करने में असफल थी। परिवार की जिविका का बोझ रेवती के कंधों पर लद गया। उसे नौकरी करनी पड़ी। नौकरी के साथ साथ उसने एम. ए. तक की शिक्षा प्राप्त कर ली। फिर तलाश शुरू हुई एक नई दिशा की। सम्पादन के क्षेत्र में वह उन पढ़े लिखे युवाओं की पंक्ति में खड़ा होना नहीं चाहती थी जो उच्च शिक्षा पाने के बाद डिग्री तो पा जाते हैं किन्तु नहीं पा पाते अपने योग्य कोई अच्छा काम। अपने योग्य कोई सही दिशा, यही कारण है कि युवा दल अंधकार के शून्य में तिल तिल धँसते चले जा रहे हैं।

रेवती आत्म दया से पीड़ित रहीं फिर भी उसे विश्वास है कि उसकी परिस्थिति ऐसी नहीं जो आसाधारण रूप से दुर्भाग्य पूर्ण हो। वह अपने आप को कुछ कर सकने योग्य बनाना चाहती थी ताकि अपने विषय के दायरे में रहकर एक दिशा कायम कर सके। उसकी

अपार चाह थी पिता द्वारा छोड़े गये सम्पादन के कार्य पर छाई हुई अन्धकार की परत को हटाकर उसपर रौशनी की प्रबल ज्योति बिखेरने की। ऐसे में रेवती अपने वर्तमान से हटकर सोचने लगती उसका जी चाहता सब कुछ छोड़ दे, सब को ठुकरा दे और चिल्ला चिल्लाकर माँग ले अपना अधिकार अपना अस्तित्व। किन्तु बिना पंख कब तक ऊँची उड़ान भरी जा सकती है। वह तुरन्त वास्तविकता के धरातल पर उतर आई। पलभर को लगा लोग सत्य को स्वीकार करने को इतना झिझकते क्यों हैं, मिथ्या के आवरण के लिए इतने उत्सुक क्यों रहते हैं? ऐसा विचार आते ही उसे लगा - जैसे रूह के ताबूत के आसपास जिन्दगी का हिसाब एक एक कर उठने लगा। वह कब तक अन्धकार की भीड़ में जूझती रहेगी एक नई रौशनी की तलाश में। क्या वह यों ही जूझती रह जाएगी सारी जिन्दगी। यों तो आशा हर कोई बंधाता है किन्तु हर आशा नागफनी ही बनी रही, जिसे वह छू तक नहीं पाई।

रेवती ने स्वयं मन ही मन निश्चय किया, कुछ करने का ताकि उस राह से होकर एक दिशा पा सके। जहाँ उसकी चाहत की सफलता पनप सके। उसने अपने निश्चय को दृढ़ किया और उसे प्रमाण के रूप में बाहर आकर निर्णय लेने को मुक्त कर दिया। अब वह इस मामूली सी दिशा हीन नौकरी पर नहीं जाएगी। वह उन्मुक्त होकर मुक्त रूप से कार्य करेगी। उसका कार्य, कार्यक्षेत्र सब कुछ अलग होगा। घुट - घुट कर घुटने वाली जिंदगी उसे त्यागनी ही होगी।

अपनी माँ को सारी बातें समझाकर रेवती ने नौकरी छोड़ दी और पत्रकारिता में डिप्लोमा कोर्स कर लिया। पिता का कार्य क्षेत्र जो अंध-कार में विलीन हो चुका था, रेवती उसे फिर से समाज के सामने रौशनी पर लाना चाहती थी। उसने पत्र-पत्रकारों से सम्पर्क किया, किन्तु एकाएक सबकुछ हो जाना असम्भव था। विस्तृत कार्य को चलाने

के लिए पहली जरूरत उसने अनुभव की, एक भारी सरकम धनराशि की। जिसके लिये उसने बैंक से ऋण ले लिया। इतना कुछ होने पर भी परिवार से जुड़े रहकर भी रेवती को पिता की कमी खलती रहती। रात दिन की लगन से सम्पादन का कार्य उसने अपने हाथों में थाम लिया। पिता के खोये हुए सपनों को पुनः साकार करने में वह सफल हुई और अपने हक में जीवन जीने की नई राह तलाशती वह बिखरे हुए जीवन के पहलुओं को सलीके से संजोने लगी।

निरन्तर काम के बोझ से दबे रहने के कारण वक्त से पहले हावी होने वाली प्रौढ़ सी गम्भीरता एवं भावुकता रेवती के चेहरे से अनायास ही छलकने लगी। किन्तु मन चाहे काम की कामना में सफलता की सीढ़ी चढ़ते हुए रेवती ने कभी उफ तक नहीं की।

रेवती के सम्पादन कार्य की बागडोर स्वच्छन्द रूप से चलने लगी। आहिस्ता - आहिस्ता सब कुछ सुलभ होता चला गया। जो कल तक रेवती के लिए असम्भव था उसे रेवती ने अपनी लगन और कोशिश के बल पर यथार्थ में बदल दिया, और फिर एक लम्बे अन्तराल के बाद फिर से शहर में गूँज उठी वही पुरानी पत्रिका की आवाज- रौशनी तलाशते अँधेरे" संस्करण पर संस्करण प्रकाशित होने लगे। साहित्य जगत के समस्त पहलूओं को समेटे मार्मिक भावनाओं से ओत-प्रोत रौशनी तलाशते अँधेरे फिर धूम मचाने लगी। नये युग की नई चेतना की पत्रिका हर कोण से बेजोड़ एक नई दिशा एक नया आयाम देती है जीवन को। रेवती का हृदय आपार सफलता से प्रफुल्लित हो उठा। इतनी लम्बी यात्रा के बाद गर्मी और प्रचन्ड लू से राहत मिली। सर्वत्र हरियाली सी छा गई। नई चाहत की कोपलें पल्लवित होने लगीं। ऐसा तो होना ही था। क्योंकि दृढ़ निश्चय के आगे कठोर से कठोर वज्र भी पसीज जाता है। दुख और ताप के बीच से ही कल्याण का मार्ग निर्माण होता है। जब पर्वत की छाती फटती है तभी सरस प्रपात निकलते हैं। अंधकार की काली घटा जब पिघलकर बरसती है तभी आकाश स्वच्छ और साफ नजर आता है।

महारास

— रामकुमार गुप्त

(१)

परम लुभावनी, सुहावनी शरद ऋतु,

व्योम बीच राज रही पूनो की जुन्हाई है।

अमल, धवल मानो शत दामिनी की द्युति,

व्रज-रज माँहि कोटि चन्द्रिका सुहाई है।

वृन्दावन-वेलि, लता, कदम करील, कुंज,

संसृति सकल रस रासि में नहाई है।

मुहुर मुहुर जगी सप्त रागिनी की ध्वनि,

अधरान धरी, मधु मुरलि कन्हाई है।

(२)

श्रवनन सुनि मनमोहन मुरलि ध्वनि,

कुरंग, विहंग जागे मोर चकई चकोर।

धाई व्रजबाम लेत मोहन विविध नाम,

नन्दलाल, नटवर, गिरधर, चित्तचोर।

देव, नर, किन्नर, मुनीस, योगी गोपी रूप,

घिरि आये व्रजराज के समाज चहुँ ओर।

कुंचित अलक, शुभवदन मदिर हास,

काम छवि, कोटि रवि, निरखत हो विभोर।

(३)

झाँझ, पखावज, वेणु, मृदंग

उमंग में दिव्य वजे बहु बाजे।

सृष्टि-नटी जड़-चेतन संग लै,

आई मनोहर साज है साजे।

मोहन-राधिका रास विलास,

निहारिकै काम कला निज लाजे।

गोपी अनेक हैं, रूप अनेक हैं,

एक ही श्याम अनेक विराजे।

(४)

थिरकत नन्दलाल अनुहरि गतिताल,

गल-बाँहि डाल सोहैं श्याम-श्याम संग में।

दमकत बदन, बसन सब फहरत,

घूमि घूमि, झूमि झूमि नाचे रास रंग में।

लहरत प्रणय-उदधि की नयी हिलोर,

क्षण-क्षण बाढ़ी प्रीत व्रजबाल - अंग में।

निरखत महारास चांदनी ठिठुकि रही,

बार-बार हार जीत होत है अनंग में।

निकट– मंगला देवी मन्दिर
गोला गोकर्णनाथ
खीरी - 262802 (उ प्र.)

चिंतन—

आशा का उल्लास—आपके आसपास

—डा० हरिमोहन लाल श्रीवास्तव

आशा एक बलवती शक्ति है। भारत में तो यहाँ तक कहा जाता है कि आशा से आकाश थमा है। आकाश थामने वाला आशा का खम्भा चर्म-चक्षुओं से भले ही न दिखाई दे परन्तु जीवन में आशा का महत्व असंदिग्ध है, क्योंकि लोग कहते है— 'जब तक साँस तब तक आस' निश्चित रूप से आशा हमारी प्रत्येक श्वास के साथ जुड़ी हुई है। परन्तु आशा है क्या ? एक आंग्ल विद्वान के अनुसार– 'आशा चलते हुए एक व्यक्ति का स्वप्न है।' आदमी घूमते-फिरते जो स्वप्न संजोता है वह आशा है। बच्चा जब तक चलने-फिरने योग्य नहीं होता वह आशा के मर्म को समझ नहीं पाता जब किसी वस्तु की चाह जाग्रत होती है, तभी उसकी प्राप्ति की आशा जन्म पाती है। इस प्रकार चाह या इच्छा, ललक या लालसा, अभिलाषा या आकांक्षा आशा देवी की जननी के पर्याय ठहरते हैं।

आशा पुत्री है आकांक्षा की और वह धात्री है आस्था की। कुछ अच्छा पाने की आकांक्षा से आशा बढ़ती चलती है और उसके विकास के साथ विश्वास की छोटी बहन आशा भी पनपती है। एक आंग्ल लेखक ने आशा को 'युवा इच्छा की धाय' के रूप में सम्बोधित किया है। युवा-वस्था जीवन का स्वर्ण युग है और है वह समय जब भोग की इच्छा बलवती होती है और वह सपनों का सतरंगी जाल बुना करती है। तभी आशा की उड़ान पूरी हो जाती है— दूसरे शब्दों में उसका ध्येय यदि पूरा हो जाता है तो मानो 'आशा' का मिलन अपने पति आनन्द से हो गया। चिन्ता आशंका और निराशा— ये तीन भावनाएँ है जिनसे आशा का वैर बना हुआ था।

सैमुअल जान्सन नामक विचारक का कथन है—

'आशा स्वयं आनन्द का ही एक प्रकार या रूप है, और कदाचित प्रमुख आनन्द है, जो यह संसार उपलब्ध कराता है।

आशा और आनन्द का अपना गठबन्धन है। आशा सदैव आनन्द का हित-चिन्तन करती है। जो जीवन से बिल्कुल हताश हो गया है, उसकी बात छोड़िये; क्योंकि उसपर तो आशा की प्रबल प्रतिद्वंद्विनी निराशा हावी हो जाती है अन्यथा कोई भी अपने अनिष्ट की कामना न करेगा— दूसरे शब्दों में, अपने लिये किसी बुरी बात की आशा नहीं करेगा। आशा का तो सदैव एक उन्नत उज्ज्वल, हँसता-जगमगाता रूप है। तभी तो पाप नामक एक कवि आशा की प्रशंसा में गाता है कि आशा मानव-हृदय का अनन्त स्त्रोत है, जो उमड़ता है केवल इसलिए कि मानव का सृजन वरदान पाने के निमित्त हुआ है।

कबीर दास जी ने कहा है:—

आसा जीवै, जग मरे, लोग मरे मरि जाय।
सोइ सूबे धन संचते, सो उबरे जो खाय ॥

लोग तो मरते ही रहते हैं— मर कर भी नया जन्म ले लेते हैं, परन्तु हर जन्म में आशा उनके साथ जीती रहती है। संचय तो व्यर्थ है— खाओ पियो—मस्त रहो। खर्च करो और आशा रखो कि ईश्वर खर्च भेजेगा।

हमारी संस्कृति का प्रसार तो मन से हुआ है— इसलिए हम 'मनुज' या 'मानव' कहलाये। पर जो विदेशी आदम को संसार का प्रथम पुरुष और ईव (हव्वा) को संसार की प्रथम स्त्री मानते हैं वे प्रचारित करते हैं कि इस दुनिया में जितनी भी बुराई आई, वह ईव द्वारा वर्जित फल खाने से। विचार करने की बात है कि जब शैतान ने ईव को उस फल को चखने के लिए उकसाया होगा, तो उसे कुछ न कुछ आशा तो दिलाई होगी। और नहीं तो बढ़िया स्वाद मिलने की बात तो बताई होगी। एक

आशा लेकर ईव ने फल को कुतरा और हुआ नग्नता का बोध। लोग इस बोध से ही बुराई का जन्म मानते हैं, परन्तु शैतान तो एक प्रकार से ईश्वर की इच्छा ही पूरी कराना चाहता था। इस बोध ने ही आदम और ईव को आगे चलकर इतना सयाना बना दिया कि सृष्टि चल निकली। दोनों को बनाने में ईश्वर ने भी तो आशा की होगी कि हम बार-बार बनाने के कष्ट से बचें और हमारी सृष्टि चलती रहे।

हाँ तो, जब कोई आशा पूरी होने को होती है, तो शैतान के माध्यम से भी पूरी हो जाती है। ईव ने वर्जित फल चख कर ही मातृत्व की आशा पूर्ण होने का मार्ग समझ लिया। 'एक्सपैक्टेट मदर' (आशान्वित माता) नौ मास तक आशा साथ लगाए रहती है कि वह अपनी किसी प्रतिलिपि को जन्म देगी और उस तीसरे प्राणी के आगमन से घर-आँगन में नई खुशियाँ भर लाएगी। किसान भी हल चला कर, खाद देकर, बीज बोकर और पानी देकर उत्तम फसल की आशा करता है। बड़े चाव और उत्साह से वह आशा भरे नयनों से मेघों को निहारता है। यदि प्रकृति बिल्कुल क्रूरता पर उतारू न हो अथवा किसी अनोखे मजाक की बात उसके मन में न समाये तो माता की आशा पूरी होती ही है— बेटा हो या बेटी। किसान की आशा भी अधिकतर अच्छा फल देती है— कभी किसी दैवी उत्पात से फसल कुछ कमजोर भी रह जाती है। विद्यार्थी वर्ग कड़ा श्रम करके अच्छे परीक्षा-फल की आशा लगाये रहता है। पढ़ाई से जी चुराने वाले भी सोचा करते हैं, शायद धूल में लठ लग जाए।

इन सभी स्थितियों में कार्य का कुछ परिणाम सामने आता ही है और उस फल की प्रतिक्षा में की जाने वाली आशा बहुत कुछ सार्थक होती है। किन्तु माया की भाँति 'आशा महाठगिनी हम जानी।' हमारी समझ में तो आशा और माया दो सगी बहिनें हैं— स्वभाव में बिल्कुल एक समान आशा अधिकतर छल करती दिखाई देती है। प्याले और ओंठों के बीच बहुत चूक भी है। हम हाथ में दूध या चाय का प्याला लिये हुए हों,

और उसे ओंठ से लगाने ही वाले हों कि अकस्मात कोई उड़ती हुई मक्खी उसमें गिर सकती है तो कोई भी ऐसी परिस्थिति पैदा हो सकती है कि हम पी न पायें। कभी-कभी आशा ऐसा ही निर्मम प्रहार करती है— हम सफलता के छोर तक पहुँच कर आशा लगाए होते हैं कि हम अगले ही क्षण उसे पा लेंगे। परन्तु हमें वह सफलता नहीं मिल पाती। बड़ा कठोर होता है उसका प्रहार।

यूनान के एक आख्यान अनुसार किसी देवता ने संसार की सभी बीमारियों और बुराईयों को बिच्छु, सांप या बर्रों के रूप में एक बड़े बक्स में बन्द कर दिया था। चेतावनी दी गई थी कि बक्स को खोला न जाए। परन्तु ईव की भांति पण्डोरा ने भी बात नहीं मानी। इस बालिका को सन्दूक खोलने से मना किया गया था, पर उसकी उत्सुकता ने उसे खोल ही डाला। अनेक कीट-पतंगों के दंश से पंडोरा बेहाल हो गई— उसी समय से ये व्याधियाँ संसार में छा गई। पण्डोरा की मूर्खता का परिणाम मानव-जाति उसी समय से भोगती आ रही है और इन व्याधियों से मुक्ति या त्राण की आशा प्रलय-काल तक तो कदापि नहीं। परन्तु पण्डोरा ने जिस बक्स को खोला उसमें से अन्त में निकली एक अत्यन्त रूपवती मोहक परी, और यही परी आशा के अतिरिक्त अन्य कोई न थी। संसार में फैल जाने वाली व्याधियों या दानवियों के उत्पात का शमन करने के लिए आशा-रूपी देवी अकेली ही समर्थ है। उन सभी के सम्मिलित दंश पर मरहम लगाने का काम करती है यह आशा-परी।

मानव-जाति इस अप्सरा के महत् उपकारों के लिए चिर-ऋणी रहेगी। आशा का भरोसा न होता, तो आदमी हौल खाकर कब का मर गया होता— दूसरे शब्दों में, उसका हार्ट फेल हो गया होता। परन्तु गरीब-अमीर सबके प्रति समदर्शी यह नन्ही-सी परी, जिसकी इन चर्म-चक्षुओं के समक्ष कहीं कोई आकृति नहीं, मानव जीवन में अमरता की नहीं, आम्ररस की सृष्टि और वृष्टि करती है।

'सकल पदारथ या जग माँही, कर्महीन नर पावत नाहीं' के अनुसार

वे सचमुच कर्महीन हैं जिनके जीवन आशा की मुस्कान से तनिक भी परिचित नहीं! ऐसे लोग यदि कोई है तो वे व्यर्थ जीवन का बोझ ढो रहे हैं। यथार्थ में ऐसा कोई भी तो प्राणी नहीं जो आशा के बिना जीता हो। ध्यान देने की एक अत्यन्त महत्वपूर्ण बात यह है कि आशा से निराश होकर या एक दम हताश होकर जो भी लोग आत्मघात कर बैठते हैं, वे एक महान पातक कमाते हैं। 'जीवन' के रूप में परमपिता ने जो पवित्र धरोहर दी है, वह किसी हठधर्मी से नष्ट कर देने के लिए नहीं है। जब व्यक्ति किसी को जीवन दे नहीं सकता तो उसे जीवन लेने का अधिकार भी नहीं है। दूसरों का जीवन लेना तो जघन्य पाप हैं ही, पर अपना जीवन समाप्त कर देने की कायरता भी सर्वथा निन्दनीय है।

घनीभूत निराशा की मेघमाला में भी कहीं किसी कोने में आशा की मुस्कान छिपी रहती है— हमें चाहिए की हम उस मुस्कान का विश्वास रखें– निराशा को अपने ऊपर हावी न होने दें।

आशा सदैव अच्छाई की ओर ले जाती है— हम आशा करते हैं अपने और अपनों के लिए केवल अच्छाई की। बुराई का विचार तो आशंका है। कुंठा, संत्रास, आशंका, हताशा, निराशा आदि से हम ठोक कर संघर्ष करें— आशा हमें विजय दिलायेगी। सभी आशा करते हैं 'बैटर' और 'बैस्ट' के लिए— अपेक्षाकृत अच्छे और सबसे अच्छे की।

हमें आशा करनी चाहिए कि हमारे देश में और इस विशाल संसार से बुराईयों का अन्त होगा— भावी संसार आज की अपेक्षा कहीं अच्छा होगा भेदभाव की दीवारें ढह कर रहेंगी। संसार एक प्रीतिभरा विशाल परिवार होगा— नैतिक मूल्यों की पवित्रता हमारी प्रेरक शक्ति होगी।

विश्वास कीजिये, भविष्य उज्ज्वल है, आशाजनक है। अच्छे विचार जीवन में आशा का संचार करते हैं, आशा ने जन्म पाया है आनन्द के लिए— दोनों का मिलन सभी के जीवन में उल्लास भरने के लिए है। अच्छे विचार अच्छे वातावरण का निर्माण करने में समर्थ होते हैं।

16, वर्मा जी की गली,
दतिया (म. प्र.) 475-661

 (बंगला काव्य)

 छोट्टो हिन्दुस्तान 

— पिपासा मजुमदार

ऊँचु-नीचु द्वीपे वेष्टित
सुन्दर आन्दामान
छोट्टो हिन्दुस्तान।

माथा ऊँचिये दाँडिये नारिकेल
नव वधु होये सुपारी
तरंगाड़ित तरंगेर सोंगम
हवा बोहे माधुरी।
सागोरे छोडानो मोती
झिलिमिलि कोरे
नानाविध लोक ऐखने
मिले मिशे थाके।
भाषा नानान विविध पोरिधान
किन्तु एकई सवार मान
ऊँचु-नीचु द्वीपे वेष्टित
सुन्दर आन्दामान
छोट्टो हिन्दुस्तान।

चरणधौतु सूर्य किरण
रोज प्रोभाती गाय
उथुल-पुथल समुन्द्र ढेऊ
सर्वदा नाच देखाय।

बख ऊँचिये अविचल पर्वत
झोड़ - झोंझां सहे
कँल कँल नदी मिशेछे सागरे
बिन्दु-बिन्दु तार गाथा कहे।

प्रकृति रूपे सुन्दर सौन्दर्जमयी
नि:ष्प्राणेऊ देथ मरिये प्राण
ऊचु-नीचू द्वीपे वेष्टित
सुण्दर आन्दामान
छोट्टो हिन्दुस्तान।

पोर्ट ब्लेयर होलो राजधानी
सेलुलार जेल शोनाय
सोदाई करुण काहिनी
फाँसिर दोड़ि गोलाय पोरे
शहीद होलो कोतो देश प्रेमी।

बीर शहीद देर एई पूर्ण भूमि
चतुर्दिके गुंजाईत कोरे पुण्य गान
ऊँचु-नीचू द्वीपे वेस्टित
सुम्दर आन्दामान
छोट्टो हिन्दुस्तान।



हिन्दी रूपांतर—

छोटा हिन्दुस्तान

ऊँचा-नीचा बसा घाटियों
    प्यारा अण्डमान
    छोटा हिन्दुस्तान।

हरे-भरे हैं खड़े नारियल
दुल्हन बनी सुपारी।
बल खाती लहरों का संगम
हवा बहे नित प्यारी॥
सागर में बिखरे मोती से
झिलमिल-झिलमिल करते
तरह-तरह के लोग यहाँ पर
मिलजुल कर हैं रहते॥

    भाषा अलग, विविध पहनावे
        एक सभी का मान
    ऊँचा नीचा बसा घाटियों
        प्यारा अण्डमान
        छोटा हिन्दुस्तान।

पग पखार सूरज की किरणें
रोज प्रभाती गातीं।
इठलाती-बलखाती लहरें
हरदम नाच दिखाती॥
सीना तान खड़े हैं पर्वत
तूफानों को सहते

कल-कल नदी मिले सागर से
कण-कण गाथा कहते ॥

प्रकृति यहाँ की सुघड़-सलोनी
भरती रहती प्रान
ऊँचा नीचा बसा घाटियों
प्यारा अण्डमान
छोटा हिन्दुस्तान ॥

पोर्ट ब्लेयर है इन द्वीपों की
सुन्दर सी राजधानी
सेल्यूलर जेल सुनाती है
हरदम करुण कहानी ॥
लटक गये फाँसी के फन्दे
कितने ही परवाने
आजादी की बलि-वेदी पर
होम हुए दीवाने ॥

वीर शहीदों की धरती ये
गूँज रहे हैं गान
ऊँचा-नीचा बसा घाटियों
प्यारा अण्डमान
छोटा हिन्दुस्तान ॥

साक्षात्कार —

कविता से जीवन पाने वाला कवि : केदारनाथ अग्रवाल

— अशोक लव

श्री केदारनाथ अग्रवाल जितने अच्छे कवि हैं उतने ही अच्छे मानव हैं। साफ-स्पष्ट कहते हैं। कोई लाग-लपेट नहीं। अहम् से कोसों दूर। बाँदा के माने एडवोकेट। धनी परिवार में जन्मे। धन से कोई मोह नहीं। कविता ही उनका जीवन है। ऋषियों से संसार में रहकर सांसारिकता से विलिप्त। उनका मानना है कि ऐसा जीवन फिर नहीं मिलेगा, इसलिए इस जीवन को भरपूर जी लेना चाहिये।

विशाल आँगन। एक ओर दो मंजिला पक्का मकान। दूसरी ओर खपरैलों से बना मकान। भीतर घुसते ही चारों ओर पुस्तकें ही पुस्तकें। पुराने ढंग का फर्नीचर, आराम कुसियाँ, चारपाई। लुंगी पर कोट पहने। सादगी सहजता की सजीव मूर्ति। चार वर्ष पहले उनसे डॉ० रामविलास शर्मा जी के निवास पर लम्बी बातचीत हुई थी। फिर श्री हरिवंशराय बच्चन के 80 वें जन्म-दिन पर आए थे तो लगभग तीन घण्टे तक उनके संग रहकर बातचीत का अवसर मिला। आवाज़ में बुलंदी थी। खुलकर हँसते थे। फरवरी 1992 में उनके निवास पर बाँदा में भेंट हुई। दुबले हो गए हैं। अवाज में पहली जैसी तेजी नहीं। निवास पर पाकर हैरान भी होते हैं। कह उठते हैं — "अरे! दिल्ली से इतनी दूर बाँदा चले आए।" प्रसन्न होते हैं। उत्तर में कहता हूं— "मेरा मन तीर्थ-यात्रा के लिए कर आया। आपके पास इसीलिए चला

आया।" संग आए कवि-मित्र डॉ० शेरजंग गर्ग, असीम शुक्ल, डॉ० श्रवण राही, डॉ० श्याम निर्मम भी उनके संग का पूरा लाभ उठाना चाहते थे। असीम शुक्ल के काव्य-संग्रह का लोकार्पण श्री केदारनाथ अग्रवाल जी ने करना था। साहित्य और साहित्यिक स्थिति पर खूब चर्चाएँ हुयीं।

प्रस्तुत है उनसे हुई बातचीत के अंश—

❀ अशोक लव : आपकी रूचि साहित्य की ओर कैसे हुयी?

❀ केदारनाथ अग्रवाल : मेरे पिताजी का प्राचीन साहित्य और ब्रज साहित्य से बहुत प्रेम था। घर में पुराने कवियों— पद्माकर, देव, बिहारी, जयदेव, विद्यापति आदि की पुस्तकें थीं। पिताजी ने गाँव में पुस्तकालय भी खोल रखा था। उनके पास उठने-बैठने वाले रोज आते थे। आल्हा वगैरह होता था। इनका मेरे बाल मन पर बहुत प्रभाव पड़ा। उन दिनों इलाहबाद से 'शिशु' निकलता था। उसमें तोता, चिड़िया, आदि पर कविताएँ छपती थीं। इन्हें पढ़ कर कविता से लगाव हो गया।

जब नौवीं, दसवीं में पढ़ता था तो दूसरे साहित्यकारों– जगन्नाथ दास रत्नाकर, हरिऔध, निराला, पंत को पढ़ा और सुना। इससे कविता लिखने की रुचि जागी।

❀ अशोक लव : आपने किस भाषा में लिखना आरम्भ किया?

❀ केदारनाथ अग्रवाल : मैंने ब्रज और खड़ी बोली दोनों में लिखना आरम्भ किया। कवित्त और सवैये लिखता था। इलाहबाद से 'सेवा' पत्रिका निकलती थी। उसमें कवित्त भेजे। उन्होंने इन्हें खूब पसन्द किया।

❀ अशोक लव : क्या कवि-सम्मेलनों में भी जाने लगे थे?

❀ केदारनाथ अग्रवाल : इलाहबाद में रसाल जी आदि कवियों ने रसिक-मंडल बनाया हुआ था। जहाँ जाकर कवि-सम्मेलनों में कविता

सुनाता था।

❀ अशोक लव : आप मुक्त-छन्द कब से लिखने लगे ?

❀ केदारनाथ अग्रवाल : मुझे पिंगल नहीं आता था। मैंने किसी से ट्रेनिंग भी नहीं ली थी। घर में डर के मारे दिखाता नहीं था। इसका नतीजा यह हुआ कि निराला के मुक्त छंद में लिखने लगा। वैसे इस तरह मैं पहले भी लिखता था पर विश्वास नहीं था कि वह कविता है। जब निराला की कविताएँ देखीं तो उसी तरह लिखने लगा। यह अच्छी बात हुयी। हमारे कविता के संस्कार पक्के हो गए। कविता से इश्क हो गया।

❀ अशोक लव : तत्कालीन साहित्यिक स्थिति और वर्तमान साहित्यिक स्थिति में क्या अन्तर आया है ?

❀ केदारनाथ अग्रवाल : जिस प्रकार राजनीति में कोई किसी को कुछ नहीं समझता, वैसे ही आज साहित्य में नहीं समझता। इसे यूँ कहिए कि व्यक्ति स्वातंत्र्य बढ़ा है। समाज की आदर्शों की, जीवन-पद्धति जीने की जकड़बंदी टूटी है। इस कारण विद्रोही भाव पैदा हुआ। पहले कविता की सांस्कृतिक विकास की परम्परा से नया निकलता था। निराला आदि कवियों ने छायावाद से निकल कर नई कविता, यथार्थ-वादी कविता लिखी थी। आज ऐसा नहीं है।

❀ अशोक लव : ऐसा क्यों हुआ ?

❀ केदारनाथ अग्रवाल : आज चिंतन-मनन नहीं होता। अपने ताव, जोश में आज के कवि सोचते हैं कि अकविता भी कविता है। ठोस भी कविता है। कविता गहरे डूब कर लिखनी चाहिए। ऐसी कविता हो जो भाव-विह्वल कर दे। ऐसे शब्द हों जो सुनने में अच्छे लगें। कविता में सौंदर्य हो, ध्वनि हो। आज इनसे अरुचि हो गयी है।

❀ अशोक लव : मुक्त-छन्द में लिखना विवादास्पद है। आप इसे किस रूप में लेते हैं।

❀ केदारनाथ अग्रवाल : जो पढ़ा-लिखा, शिष्ट-शालीन था उसने इसे (मुक्त-छन्द) अपनाकर अच्छी कविता लिखी। जिसने केवल विद्रोह के लिए लिखा उसकी कविता कुछ न रही। कुछ कवि केवल मनोवैज्ञानिक चित्रण, वैयक्तिक-चित्रण या व्यक्ति-स्वातंत्र्य की भावना भर रहे हैं, और कुछ नहीं। इनकी कहीं संबद्धता नहीं है। शब्द और अर्थ की संगत, लय टूट गयी। सब छूट गए तो कविता में क्या रह गया?

❀ अशोक लव : क्या साहित्यकार गिरते सामाजिक जीवन-मूल्यों में परिवर्तन ला सकता है?

❀ केदारनाथ अग्रवाल : साहित्यकार की कलम की नोक से कविताएँ या कहानियाँ लिखकर परिवर्तन नहीं आ सकता। कवि विचारे का समाज में स्थान ही क्या है? अगर कोई प्रधानमंत्री हो और कविता लिखता हो तो उसकी कविता की सब नकल करेंगे। साहित्य का प्रभाव मानसिकता बदलने से होता है। मानसिकता सहज नहीं बदलती। कवि क्रांति नहीं कर सकते। क्रांति हाथों से आती है। सामाजिक परिवर्तन के लिए संगठन की आवश्यकता होती है। कवि अकेला है।

★ अशोक लव : जीवन को सही ढंग से जीने में आप किसे सहायक मानते हैं?

★ केदारनाथ अग्रवाल : जीवन को जीने में कविता और पत्नी ने बहुत मदद की है। समाज के किसी आंदोलन ने बल नहीं दिया। मेरी एक कविता है---

दुःख ने मुझको जब-जब तोड़ा
मैंने अपने टूटेपन को
कविता की ममता से जोड़ा
जहाँ गिरा मैं

कविताओं ने मुझे उठाया
हम दोनों ने वहाँ
प्रात का सूर्य उगाया।

यही हमारी जिन्दगी है। संबद्धता जीवन है। नहीं तो शून्य में बैठें शून्य-महल में घुस जाइए। मर जाइए। चेतना की सृष्टि में सबसे जुड़ना चाहिए। कविता से ही जिन्दा हूँ।

★ अशोक लव : आप कविता न लिखते, तब क्या करते?

★ केदारनाथ अग्रवाल : ब्लैक मार्केटिंग करता। बनिया जात का तो था ही। व्यापार होता। वकील था। खूब घूस लेता। महल बनवाता। कोठी बनवाता। मोटर लेता। चकाचक रहती। दारू पीता।

★ अशोक लव : साहित्य में योगदान के लिये मिलने वाले पुरस्कारों पर आपकी प्रतिक्रिया?

★ केदारनाथ अग्रवाल : पुरस्कारों की हमने कभी परवाह नहीं की। मिल गया तो बात दूसरी है। मिला क्या (साहित्य अकादमी पुरस्कार की ओर संकेत) अपने आप झख मारकर दे दिया। उनको बिना दिए बना नहीं और हमें यह था कि मिल गया तो दे जा भैया। गरीबी में आटा गीला। बाकी थोड़ी देर के लिए अच्छा लगता है। यह कविता ने ही तो दिया। यश दिया।

★ अशोक लव : युवा साहित्यकारों का लेखन आपको कैसा लगता है?

★ केदारनाथ अग्रवाल : कभी-कभी युवा कवियों की अच्छी कविताएँ दिख जाती हैं। लिखने का उत्साह बहुत है। इतना ज्यादा लिखते हैं कि मनोयोग से नहीं लिखते। पहले लोग साधना की तरफ ध्यान देते थे।

युवक हड़बड़ी में रहता है। समाज में प्रतिष्ठा चाहता है। छपना चाहता है। उसे समझना चाहिए ट्रेनिंग पीरियड चल रहा है।

हतोत्साहित नहीं होना चाहिए। हम लोग भी बहुत साल तक लिखते रहे। कविता कहानी के लिए जीवन-दर्शन की जरूरत है। इसकी युवाओं में कमी है। बह जाते हैं। नारेबाजी इधर-उधर बहा ले जाती है।

अशोक लव : साहित्य के क्षेत्र में आपके प्रेरक कौन थे ?

★ केदारनाथ अग्रवाल : साहित्यिक जीवन में बस उपेक्षा ही मिली। निराला ही कहते थे जो कहते थे रोज घन्टे दो घण्टे अवश्य लिखा करो। रामविलास शर्मा हमारे मित्र थे। इनसे प्रेरणा मिली।

★ अशोक लव : हिन्दी भाषा की वर्तमान स्थिति पर आपकी प्रतिक्रिया ?

★ केदारनाथ अग्रवाल : हिन्दी का जो विकास होना चाहिए था, नहीं हुआ। हिन्दी समझी जाती है बेवकूफों की भाषा, पंडितों की भाषा, बेकार के लोगों की भाषा। अखबार अपनी भाषा की नीति से प्रभावित नहीं कर पाये। हिन्दी के प्रति लोगों में ललक नहीं है कि यह हमारी मातृभाषा है। हिन्दी के साथ भीतरघात चल रही है। चाहे-अनचाहे, जाने-अनजाने यह हो रहा है। आप जितना चिल्लाइए इसका असर नहीं होता।

हिन्दी भाषा साहस की भाषा है। आदर्शों की भाषा है। नैतिकता लिए हुए है। चरित्र की भाषा है। यह मिमयाने वालों की, बकरी की भाषा नहीं है। भिखारियों की भाषा नहीं है। यह संघर्ष-शील लोगों की भाषा है। इसको बनने में उन लोगों जैसा चरित्र चाहिये। डबलरोटी अण्डा खाकर, होटल में बैठकर यह थोड़े ही आएगी इसके लिए माँ से प्यार जैसी ललक चाहिये, जान दे देने की ललक चाहिए। आज अपनी माँ के लिए प्रेम नहीं रह गया है। मातृभाषा से प्रेम क्या होगा!

फ्लैट-1?, द एयर फोर्स स्कूल कैंपस
सुब्रतो पार्क, दिल्ली छावनी।

❀ एक लेखनी : तीन छन्द ❀

— डॉ० प्रसाद 'निष्काम'

(1) पूर्णिमा छन्द (बहरे कामिल)

न हँसी खुशी, न तो गुदगुदी, न पिघल सका कोई गर्म दिल।
न किसी की आँख में शील है, न तो रह गया कोई नर्म दिल।
ये हसीन युग, ये मशीन युग, न रवायतें, न इनायतें ;
न सुझाव हैं, न तो भाव-रस, न हया कहीं न ये शर्म दिल।
वो जो मौत को भी भुला चुके जैसे हों अमर, न मरें कहीं;
न सुबुद्धि है, न विवेक है, न धड़क सका कहीं धर्म दिल।
ये जो सिर चढ़ीं खुदगर्जियाँ, वो तो सिर चढे, ये भी सिर फिरे;
उफ, शोरगुल, न तो शांति-सुख, हमदम मजल न ये मर्म दिल।
यूँ न सोचकर 'निष्काम' तू शुभ काम कामिल कर सही;
तू विकार है प्रिय प्यार का, जो करे कहीं सत्कर्म दिल।

(2) गर्विता छन्द (बहरे रजज़)

भगवान भोलेनाथ जी हम पर कृपा करते रहें।
सोने के बिस्कुट खाएँ हम, भूखों सभी मरते रहें।
घोड़ों की यारी घास से होती नहीं फिर भी कहीं;
जनता है प्यारी घास तो घोड़े - गधे चरते रहें।
हम शेर हैं वन-तंत्र के क्यों खून पीना छोड़ दें ?
भरपेट हम गुर्रायें फिर यमराज भी डरते रहें।
अन्धा जो बाँटे रेवड़ी, खुद आपको देता फिरे;
फाँका कशी हो देश में, हम अपना घर भरते रहें।

भूले शहीदों का चलन हम रहनुमाए वक्त हैं;
रख दें उड़ाकर धज्जियाँ सुख देश का हरते रहें।

नर मांस जो हमसे बचे, गीदड़ सभी खाते रहें;
पत्ते. यही जंगल के फिर मत-कोष बन झरते रहें।

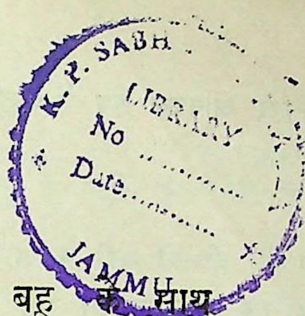
सचमुच धरा पर स्वर्ग है हमने संवारा कर्म से,
विघटित हैं जीवन मूल्य तो सब नर्क में तरते रहें।

मज़हब, सियासत, पंथ सब आपे में अपने कैद हैं;
एकात्मा की नींव फिर 'निष्काम' जन धरते रहें।

३ अभिसार छन्द (बहरे मुतकारिब)

कहाँ जा रही है लगी दिल की यारों ?
गुजरती सदी है लगी दिल की यारों !
लगी लौ-लगन क्या मजा आ रहा है;
बहर बन गई दिल्लगी दिल की यारों !
न रोया कभी जो वही गा रहा है;
खिली चाँदनी है, लगी दिल की यारों !
ये नेकी बदी जो बदी थी हुई है;
गजब त्रास दी है लगी दिल की यारों !
जो काँटों में खिल-खिल हँसे गुल खिलाए;
वही काम दी है लगी दिल की यारों !
अछूता रहेगा तू कैसे विधाता ?
सहज दिल्लगी है, लगी दिल की यारों !
ये अभिसार 'निष्काम' किसकी गवाही
सृजन पर तुली है, लगी दिल की यारों !

2–बी, न्यु सरस्वती नगर, बलकेश्वर,
आगरा–282004



हास्य—व्यंग्य

गांधारी की अंतिम बहू के साथ एक होलियाना बातचीत

— डॉ० बालेन्दु शेखर तिवारी

जैसा कि आप सब जानते हैं, द्वापर में सकुशल सम्पन्न हुए महाभारत के समय कौरव टीम के अंतिम खिलाड़ी युयुत्सु ने दलबदल कला का मनोहारी आदर्श उपस्थित किया था। लेकिन इस फलाकारी के बैक ग्राउण्ड में जिस आदर्श भारतीय ललना की प्रेरणा थी उसके नाम और काम से तो स्वयं महर्षि वेद व्यास भी परिचित नहीं थे। यही कारण है कि आप नहीं जानते हैं कि कौरव कुलदीपक संख्या एक सौ यानी श्री युयुत्सु सिंह की निज्जी धर्म पत्नी श्रीमती वनिता सिंह को भगवान श्री कृष्ण ने अमरता का वरदान दिया था। उसी वरदान के सहारे हम गाँधारी की अंतिम बहू के साथ नितांत पावन और प्राइ-वेट बातचीत कर सके।

कल कचानक सरेराह चलते-चलते वनिता जी मिल गई। उनके दर्शन मात्र से आश्चर्य सभी दिशाओं से टपकायमान हो गया। चरण कमल थम गए, पलकें गिरना भूल गईं, वाणी ने असहयोग आन्दोलन कर दिया। सचमुच वह वनिता जी ही थी। उनके साथ बातचीत कैसे श्री गणेशित हुई और फिर कैसे सघन हुई, वह किस्सा फिर कभी। ... ... अभी तो इतना ही काफी है कि हमारे विशेष आग्रह पर उन्होंने होली के अवसर पर एक पंचरंगी इन्टरव्यू दिया। सो सुखद

साक्षात्कार अविकल रूप में प्रस्तुत है, ताकि सनद रहे और वक्त जरूरत काम आए। ... ...

प्रश्न :
बनिता जी, बीसवीं सदी के आखिरी दशक में आपका स्वागत करते हुए हमें हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। आपका बहुत-बहुत स्वागत है।

वनिता जी :
आपको भी बहुत बत धन्यवाद कि आपने मेरा साक्षात्कार लेना चाहा। वरना भूमण्डल पर किसके पास इतना समय है कि सदियों पुराने परिवार की सबसे छोटी बहू को इतना मान दे।

प्रश्न :
अरे नहीं, वनिता जी। आप तो हमारे लिए वी० आई० पी० हैं। सब से पहले तो आप हमें यह बताइए कि अपनी सास श्रीमती गाँधारी देवी के साथ आपके कैसे सम्बन्ध थे?

वनिता जी :
अपनी सासश्री के साथ मिलने का अवसर हमें साल में तीन बार मिलता था। इसलिये हमारे सम्बन्ध ... ...।

प्रश्न :
माफ कीजिए, ये साल में तीन बार ही मिलने का कारण समझ में नहीं आया। इसका खुलासा करें।

वनिता जी :
आप तो जानते ही हैं कि हमारी सास श्री के पास एक सौ बहुएँ थी। तो हमारी सास श्री ने बहुओं के साथ लड़ने के लिए अलग-अलग दिन तय कर रखे थे। जैसे अगर आज वे मुझसे लड़ गई तो फिर सौंवे दिन दुवारा लड़ने की बारी आती थी। हर बहू के साथ वे साल में तीन दिन लड़ने का कार्यक्रम चलाती थीं। इसी घरेलू महाभारत में तीन सौ दिन गुजर जाते थे और शेष पैंसठ दिन-वो क्या कहते हैं

आजकल-लीजर होते थे।

प्रश्न :

इसका मतलब यह हुआ कि सास और बहू के लड़ने का फैशन आपके युग में भी लोकप्रिय था।

वनिता जी :

अत्यधिक लोकप्रिय था। हर आदर्श सास और बहू को लड़ने में निपुण होना ही चाहिए। हमारी सास श्री तो बहुत ही जुझारू महिमारत्न थीं। अत्यन्त कलात्मक शैली में पूरी आत्मीयता से लड़ती थीं। आज भी उनकी युद्ध मुद्रा के स्मरण मात्र से रोमाँच हो आता है।

प्रश्न :

लेकिन, क्या श्रीमती गाँधारी देवी अपनी सभी बहुओं के साथ लड़ती थीं? एक सौ बहुओं में से कोई तो अपवाद होगी?

वनिता जी :

जी नहीं, कोई अपवाद नहीं। वास्तव में एक सौ पुत्रों के जन्म में उनकी रुचि इसीलिए बनी कि अधिकाधिक संख्या में बहूएँ उपलब्ध हों और अधिकाधिक सास-बहूसुलभ लड़ाइयाँ हो सकें।

प्रश्न :

चाहे जो हो वनिता जी, इतना अन्याय तो आपलोग करती ही थीं कि एक ऐसी सास के साथ लड़ती थीं— जिस बेचारी ने अपनी आँखों पर पट्टी बाँध रखी हो।

वनिता जी :

कृपया हमारी सास श्री को बेचारी न कहिए। वे बहुत ही दबंग महिला थीं और जानबूझ कर आँखों पर पट्टी बाँधती थीं।

प्रश्न :

उन्होंने जानबूझ कर आँखों पर पट्टी क्यों बाँध ली, यह तो हम सब जानते हैं, लेकिन ... ...

वनिता जी :

आपको सच्चाई नहीं मालूम। घर से बाहर कदम रखते ही हर ओर लाल तिकोन दिखाई पड़ते थे, जबकि हमारी सास श्री का संकल्प एक सौ पुत्रों को जन्म देकर गिनीज बुक ऑफ रेकर्ड में शामिल होना था। इसीलिए उन्होंने आँखों पर पट्टी बाँधनी शुरू की ताकि कार्यक्रम असफल न हो जाए।

प्रश्न :

लेकिन एक सौ पुत्रों के कारण गाँधारी देवी को कोई असुविधा नहीं होती थी ?

वनिता जी :

कदापि नहीं। महासंतानवती होने के कारण हमारी सास श्री का गणित मजबूत हो गया था। हर रात वे सोते समय बच्चों की गिनती कर कर लेती थीं और उनके बच्चे भी अपनी क्रमसंख्या नहीं भूलते थे। आज के बच्चे अगर गणित में कमजोर हैं तो इसका कारण परिवार नियोजन ही है।

प्रश्न :

इसका मतलब यह हुआ कि आप 'छोटा परिवार सुखी परिवार' की थ्योरी में विश्वास नहीं रखतीं।

वनिता जी :

एकदम नहीं। सत्य तो यह है कि परिवार के छोटे या बड़े होने का सुख के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। आप ही बताएँ कि हमारे पितामहर्षि भीष्म से भी अधिक दुखी कोई था ? जबकि उन्होंने विवाह तक नहीं किया था, परिवार की कौन कहूं ?

प्रश्न :

लेकिन वनिता जी, इतने बड़े परिवार में कोई उत्सव या पर्व मनाने में भी तो बड़ी परेशानी होती होगी। जैसे, होली के समय ··· ···

वनिता जी :

उन दिनों की होली की खूब याद दिलाई आपने। अहा, कैसी मनभावना होली होती थी हस्तिनापुर में। मैं बहुत सुरक्षित रहती थी। हमारे मिस्टर श्री की कुल निन्यानवे भाभियाँ थीं और उन सबके बीच मची धूम से सारा महल गुलजार रहता था।

प्रश्न :

फिर आप किसके साथ होली खेलती थी? आपका कोई देवर तो था नहीं।

वनिता जी :

क्यों? हमारी वन एण्ड वनली ननद दुश्शला नहीं थी? और फिर उसके पतिश्री जरासंघ महाराज। अरे पिताश्री रे पिताश्री, धुँआधार होली खेलते थे हमलोग।

प्रश्न :

होली के मौके पर आप किन पकवानों को बनाती, खाती और खिलाती थीं? इस बारे में भी कुछ बताइए।

वनिता जी :

हमारे प्रासाद के किचेन में इतने किस्म के आइटम थोक मात्रा में बनते थे कि उनमें से अधिकांश के नाम भी मैं भूल गई हूँ। फिर भी कुछ याद हैं, जैसे दधि अनुभूति, शीतदेवी, मिष्टान्न बच्चन, राकेशतंदुल, बसंत-दोसा, शोध-रेखा, सुजाता नैवेद्य आदि।

प्रश्न :

इन आइटमों को कौन बनाता था?

वनिता जी :

हम तो नहीं बनाते थे। लेकिन मेरे जेठ श्री संख्या 14, 65, 73 और 87 स्वयं किचेन में जाकर नए-नए पकवानों को तैयार करने के अभ्यासी थे। और फिर, एक से एक अनुभवी कुक और शेफ थे वहाँ।

प्रश्न :

अंत में, एक पॉलिटिकल किस्म का सवाल पूछना है। आपके पति श्री युयुत्सु सिंह ऐन मौके पर अपने कौरव भाइयों को छोड़कर पाण्डव टीम में शामिल हो गए थे। इस दलबदल का क्या कारण था ?

वनिता जी :

यह परामर्श तो मैंने ही दिया था, वरना हमारे आर्यपुत्र तो इतने आदर्श पति थे कि बच्चों का होमवर्क बनाने के सिवा उन्हें कुछ और आता ही नहीं था। मैंने भाँप लिया कि महाभारत में कौरव दल को करारी हार होने वाली है। किसी की जमानत नहीं बचेगी।

प्रश्न :

तब आपने क्या किया ?

वनिता जी :

मैंने आर्यपुत्र के सामने विभीषण का पुनर्मूल्यांकन करते हुए भाषण दिया और प्रतिपादित किया कि हर युग में विभीषण बनना ही युग धर्म है, प्रासंगिक है, सही है।

प्रश्न :

युयुत्सु जी के दल बदल से क्या लाभ मिला ?

वनिता जी :

एक तो यही कि महाभारत का संग्राम समाप्त होने के बाद भी कौरव होने के बावजूद मेरे आर्यपुत्र जीवित रहे। प्रारम्भ में वे ज्येष्ठ श्री भीमसेन जी के हस्तिपालन विभाग में प्रधान उप-उपमुख्य सचिव बने। कालांतर में उन्हें गाँधार देश मे राजदूत बनाया गया और अंततः उन्हें गांधार का प्रभारी राज्यपाल ही बना दिया गया।

प्रश्न :

आपने अपना बहुमूल्य समय मेरे साथ नष्ट किया, इसके लिए हे कुरुकुल की सफलतम वधू — आपको बहुत-बहुत धन्यवाद।

हरिहर सिंह रोड, मोराबादी
राँची – 834008

❀ हाँ ❀

— ओम रायजादा

स्वपन सारे फिर से सोने हो गए।
आदमी कुछ और बौने हो गए॥

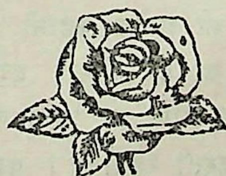
हवा नामों की यहाँ चलती है अब।
जख्म भी अपने सलौने हो गए॥

आवरण जिस-जिस जितना भी चढ़ा।
लोग वे उतने घिनौने हो गए॥

कह रहे हैं प्रगति के ये आँकड़े।
हम तलक पहुँचे तो पौने हो गए॥

"ओम" जब तक चाहे मन बहलाइए।
हम तो माटी के खिलौने हो गए॥

कटनी



समीक्षा—

अंदमान के कहानीकार : एक इन्द्रधनुषी आंकलन

— मदन मोहन उपेन्द्र

सुपरिचित साहित्यकार श्री ईश्वरी प्रसाद गौड़ के सम्पादन में हिन्दी साहित्य कला परिषद अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह, पोर्ट ब्लेयर द्वारा प्रकाशित कहानी संग्रह "अंदमान के हिन्दीतर कहानीकार" निश्चय ही एक संग्रहनीय एव पठनीय कथा संग्रह है। संग्रह में समाहित कथाकार श्री शोएब शम्स से लेकर रवीनराय चौधरी तक सभी अपनी-अपनी कथाकृति के माध्यम से भारत की विविध सांस्कृतिक समृद्धि की छटा बिखराने में सक्षम रहे हैं।

हर कहानी अपने अपने रंग रूप एवं शिल्प कथ्य में अपनी पृथक पहचान प्रस्तुत करने में सक्षम है। जहाँ "अलीरामकरतार सिंह" में जहाँ सामाजिक विसंगति और धार्मिक उन्माद पर करारी चोट है वहाँ "यादों की लहरें" कहानी भारतीय सांस्कृतिक परिवेश से ओतप्रोत है। पंजाबी कहानी "सीबो" गरीबी की यथास्थिति का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करने में समर्थ है।

सारांशतः संकलन की प्रत्येक कहानी अलग अलग भारतीय जन-मानस का सभी प्रकार का हर्ष विषाद दर्द पीढ़ी दर पीढ़ी भटकती अहमन्यता, अभाव, आक्रोश आदि को प्रस्तुत करके जीवन की विसंगतियों को स्मृतियों में तरोतजा करती रहती है। कहानी पाठक को जो सार्थक सच उपलब्ध होना चाहिए वह सही और सादा रूप में कराने में इस कहानी संग्रह की कहानियां सफल सिद्ध हुई हैं। जैसी कि मान्यता है

कि कथाकार विश्वात्मा होता है वह व्यापक दृष्टिकोण और विस्तृत चिंतन द्वारा सामाजिक विविधताओं को विसंगतियों को अपनी चटपटी भाषाशैली द्वारा पाठक के सामने साधारण घटना को असाधारण बना देता है। इस दृष्टि से कहानियां जीवन की यथार्थता को समेटती हुई जीवन्त कथाक्रम प्रस्तुत करती हैं।

संग्रह की कहानियां सम्पूर्ण राष्ट्र की सांस्कृतिक एवं सामाजिक अस्मिता की प्रेरक व्यंजना है। इतना ही नहीं आपने एक ही संग्रह में तमिल, बंगला, उड़िया से लेकर गुजराती, मराठी, पंजाबी, उर्दू, कश्मीरी आदि भारत की विविध भाषाओं की कहानी प्रस्तुत कर भारत की समग्र रंगमयी इन्द्रधनुषी छठा प्रस्तुत की है।

यह सम्पादन कला का साहित्यिक अवदान है। जिसके लिए शत-शत बधाई भी अल्प होगी। परिषद में ऐसी कृति का प्रकाशन कर भारत की सृजनात्मक एकात्मता का परिचय दिया है। ऐसे प्रकाशन क्रम परिषद को महान बनाने के लिए पर्याप्त होंगे।

ए-10 शांति नगर
मथुरा (उ० प्र०) 281001



पत्र - प्रतिक्रिया

प्रियबन्धु सरोज जी,

द्वीप लहरी का अंक 12 (1992) मिला। इस अंक में आपने इतनी अच्छी सामग्री सम्प्रेषित की है, जैसी अच्छी अच्छी साहित्यिक पत्रिकाएँ भी एकत्र नहीं कर पातीं।

डॉ० जमनालाल बायती का लेख 'धैर्य जीवन की अनमोल धरोहर और डॉ० लारी आजाद का लेख 'आज का युग धर्म' विशेष उल्लेखनीय हैं। यह संतोष की बात है कि मुसलमानों का शिक्षित समाज संकीर्णता से हटकर धर्म के तात्त्विक अर्थों से जुड़ रहा है। बशीर अहमद मयूख जी तो वैदिक ग्रन्थों के ममज्ञ हैं। उनकी कविता ने हृदय को छू लिया—

तिमिर के हर दशानन से
दिवाली का दिया
जलकर यही संदेश लाया है।

आनन्द बिल्थरे, श्रीकान्त प्रसाद सिंह और श्याम नारायण मिश्र की कविताएँ भी अच्छी लगीं। आपकी हिन्दी सेवाओं से अवगत होता रहता हूँ। बधाई !

आपका
कैलाश कल्पित
अखिल भारतीय हिन्दी प्रतिष्ठापन मंच
341, बहादुर गंज, इलाहबाद-3

आदरणीय सरोज साहब,

सादर नमस्कार।

आप द्वारा प्रेषित "द्वीप लहरी" जन-मार्च 92 अंक हस्तगत हुआ।

सम्पादकीय में आपने जो बात कही और जो संकल्प लिया है उसकी आज सख्त आवश्यकता है अगर समय रहते हमने हिन्दी साहित्य की ओर ध्यान नहीं दिया तो समाज हमें कभी माफ नहीं करेगा मंच की तड़क-भड़क से कुकुरमुत्तों की तरह उग आ रहे कवियों पर विराम लगाना ही होगा इसका मतलब यह नहीं कि प्रतिभाओं को मौका न मिले नई प्रतिभाओं को भी जो योग्य है हमें आगे लाना ही होगा। एक अच्छी पत्रिका के प्रकाशन के लिए आप सब बधाई के पात्र हैं। लीला अभिव्यक्ति परिवार सदैव सहयोग के लिये तत्पर रहेगा।

जयहिन्द !

आपका
मुरली 'अक्षय' कवि
C/o सी. एस. पारीक शीतल
पो बा. नं. 121
भीलवाड़ा-(राज)

प्रिय सरोज' जी !

यथायोग्य।

'द्वीप लहरी' अंक 13 की सम्पादकीय से सहमत हूं। छन्द मर्यादा का निर्वाह तो होना ही चाहिए। अब देखिए न इसी अंक की प्रथम कविता 'मंगलमय हो वर्ष सभी को (ईश्वरी प्रसाद गौड़) 16-12 मात्राओं के निर्वाह में विवशतावश 'देवों जन्म लिया है' लिखना पड़ा। राष्ट्रीय स्थायित्व का आधार : धर्मनिरपेक्षता डी मेहता) सामयिक भ्रांति निवारक

लेख हैं। 'आस्था की राह' (नीतीश्वर शर्मा, गजल है जो बहरे रमल हिन्दी में बिन्दु अंकन छन्द में लयबद्ध है, किन्तु दूसरे शेर की दूसरी पंक्ति उक्त बहर (फा+इला+तुन फा+इला+तुन फा+ इलुन) से खारिज है। तीसरे शेर में मिसालें की जगह मिशालें छप गया है। 'बसंत गीत' (चक्रधर नलिन) और 'सवाल' (जख्मी) प्रभावी रचनाएँ हैं। लघुकथा 'नौकर' (डा० पुष्करणा) नपुंसक यथार्थ भोग को इंगित करती है। ब्रजभाषा के भूले-बिसरे कवि : पं० दयाकृष्ण (डा० राकेश) के प्रति सम्पादकीय टीप काबिले गौर है। 'बसंती बयार' (डा० श्रीमती शकुन्तला गर्ग) सचमुच निगोड़ी ठहरी। होली हास्यम 'खींच' (अशोक भाटिया) थोड़े में बहुत मजा दे गया। 'डो सी. सी अमन' (नीलकण्ठ) ने द्वीपीय जीवन-शैली की झलक के साथ ही कई नए शब्दों से भी परिचय कराया। रंग-तरंग (राजेश चुघ) के व्यंग्य चुटीले हैं। डा० रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' का साक्षात्कार तब और अब का करुण संकट है, साहित्य और साहित्यकार के लिए। उपलब्धियों के नाम पर अशोक लव को प्रत्युतर करते समय डा० अंचल की मानसिकता स्वभावतया मर्माहत कर जाती है।

'बात करो' (रामकुमार गुप्त) के जीवन समाज व्यापी विषम हेतुके यथार्थ को मर्यादित छन्द बद्ध करने का प्रयास ही कर पाए हैं।

'द्वीप-दर्पण' आदि ग्रन्थों की आत्मग्राहिक समीक्षा यदि मैं भी करना चाहूँ, तो ?

डॉ० प्रसाद 'निष्काम'
2-बी, न्यु सरस्वती नगर,
बलकेश्वर मंदिर मार्ग.
आगरा-282004

प्रिय श्री शर्मा जी

द्वीप लहरी का ताजा अंक मिला। धनबाद देश के दूर किनारे में जहाँ साहित्य कला के नाम पर अभी तक कुछ नहीं था। वहाँ इस

प्रकार का प्रकाशन अपने आप में एक बड़ा काम है। मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ !

आपका

सत्यवीर अग्रवाल

सम्पादक, 'कल हमारा है'

मुजफ्फर नगर (उ० प्र०)

प्रिय भाई 'सरोज' जी,

अचानक मुझे आपके कुशल संपादन में निकल रही साहित्यिक पत्रिका 'द्वीप लहरी' का तृतीय वर्षीय 2 वाँ अंक एक साहित्यिक कवि मित्र श्री प्राण मोहन 'प्राण' जी के द्वारा देखने को मिला। जिसके पठनोपरान्त मेरा मन एक अजीब सारस्वत तोष से भर गया। अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के साथ-साथ समस्त हिन्दी प्रेमियों के लिए आपका यह सृजनात्मक साहित्यिक अवदान स्तुत्य है। एतदर्थ कोटिशः धन्यवाद स्वीकारें।

साभिवादन

आपका

डॉ० इन्दु भूषण मिश्र 'देवेन्दु'

मिश्र भवन, विक्रमशिलानगर

मु० पो०–कहलगाँव, जिला-भागलपुर

पिन कोड : 813203

(बिहार)

प्रिय भाई सरोज जी,

'द्वीप लहरी' का अक्टूबर दिसम्बर अंक प्राप्त हुआ। इसे हमेशा की तरह प्राप्त होते आद्योपान्त देख गया। सम्पूर्ण हिन्दी परिवेश का प्रतिनिधित्व इस पत्रिका में मिला। आप और गौड़ साहब समवेत रूप से बड़ा सराहनीय कार्य कर रहे हैं। इस अंक के केवल कुछ पृष्ठों में

कई विधाओं को बड़े अच्छे ढंग से समेटा सजाया है आपने।
आशा है सपरिवार स्वस्थ सकुशल व सानन्द हैं।
श्री गौड़ जी को मेरा नमस्कार!
शुभकामनाओं सहित

आपका
अवध किशोर पाठक
सम्पादक, 'युवारश्मि'
डी 2/2 पेपरमिल कालोनी,
लखनऊ-226006

प्रिय 'सरोज' जी,

नमन!

'द्वीप लहरी' के जुलाई-सितम्बर 91 अंक की ले० प्रति मिली, आभार! "पाठकों से" लेकर पत्र और प्रतिक्रियायें तक अंक-सामग्री की शैलीगत, रचनागत, वैचारिक-उद्‌बोधनगत व भाषायी शिल्पगत विविधता असीम सागर की विभिन्न उत्ताल-तरंगों का सा आभास देती है। प्रबुद्ध सम्पादकीय, डॉ० ब्र० स्व० शर्मा का सामयिक लेख 'साहित्य और बदलती परिस्थितियाँ', वर्तमान पारिवेशिक सन्दर्भों में श्री कपिलदेव शुक्ल का चिन्तन परक आलेख 'पुरुषोत्तम श्रीराम ... ...' प्रो० उपाध्याय का जनक सुता ... ... ' व बच्चों को झूठ से बचाइये' विशेषतः सराहनीय रचनायें हैं। कहानी 'टूटते-रिश्ते' व लघुकथा 'आखरी साँस तक' की जुगल जोड़ी खूब जमी है। दोनों कथाकारों के साथ साथ आपको भी सुन्दर अंक संयोजन हेतु बधाई! श्री हरी पण्डित व डॉ० चैतन्य की कविताएँ बहुत मन भायीं।

आपका
नीतिपाल अत्री 'सुदर्शन'
फैक्टरी एरिया,
फरीदाबाद-121001



परिषद् के गौरवशाली प्रकाशन :-

	त्रैमासिक पत्रिका	— द्वीप लहरी	5/-
1.	जाग उठे गीत-कविता संग्रह (नवीन संस्करण)	— ईश्वरी प्रसाद गौड़	35/-
2.	समय के पाखी-कविता संग्रह	— ईश्वरी प्रसाद गौड़	15/-
3.	गीत-अगीत-कविता संग्रह	— ईश्वरी प्रसाद गौड़	15/-
4.	शादी कर पछतानी-कविता	— ईश्वरी प्रसाद गौड़	5/-
5.	काला पानी-कहानी संग्रह	— ईश्वरी प्रसाद गौड़	25 -
6.	पिरी शिशिर की रात-कविता संग्रह	— ईश्वरी प्रसाद गौड़	25/-
7.	अंदमान के हिन्दी कवि-कविता संग्रह	— सं० सुरेश नंदन प्रसाद सिंह	25/-
8.	अंदमान के हिन्दी कहानीकार-कहानी संग्रह	— सं डॉ० व्यासमणि त्रिपाठी	25/-
9.	अंदमान तथा निकोबार के आदिवासी और उनकी बोली	— डॉ० व्यासमणि त्रिपाठी	50/-
10.	अंदमान निकोबार की लोककथाएँ	— लीलाधर मंडलोई-जे एस राज	25/-
11.	द्वीप दर्पण कथा-काव्य	— आनन्द वल्लभ शर्मा 'सरोज'	10/-
12	अंदमान के हिन्दीतर कहानीकार	(सम्पादित)	35/-